अधिगम परिणाम आधारित पाठ्यक्रम संरचना
हिन्दी

स्नातक कार्यक्रम
2020

हिन्दी विभाग
कॉटन विश्वविद्यालय
पानबाजार, गुवाहाटी
असम

भाग-I

1.1 **प्रस्तावना**

> साहित्य हमारे सामने यथार्थ का चित्र भी पेश करता है। साहित्य की विषयवस्तु में विचार ही नहीं होते**;** विचारों की भूमि- मनुष्य का कर्ममय जीवन भी होता है। दर्शन और विज्ञान की सहायता से हम यथार्थ को समझना चाहते हैं**;** साहित्य की सहायता से हम यथार्थ को समझना ही नहीं चाहते हैं, उसे देखना भी चाहते हैं।
>
> (रामविलास शर्मा, 1955)

साहित्य शब्द की उत्पत्ति 'सहित' शब्द हुई है। साहित्य मनुष्य के विचार-जगत और भाव-जगत को कलात्मक रूप से प्रस्तुत करता है। मनुष्य जीवन की विविधता का अंकन साहित्य का उपजीव्य है। हर्ष, विषाद, क्रोध, घृणा जैसे मनुष्य संवेदन साहित्य की आधार-भूमि है। साहित्य अनुशासन 'कला' की श्रेणी में आता है। इस तरह मनुष्य जीवन की संवेदनाओं की अभिव्यक्ति जिन साहित्य रूपों के जरिए होती है, उनकी विशिष्टता का आधार अभिव्यक्ति की कलात्मकता होती है। अभिव्यक्ति की कलात्मकता अंततः सौंदर्य की सर्वमान्य श्रेणियों के प्रतिमानों के आधार पर मूल्यांकित होती है। यही कारण है शास्वत यह प्रश्न बना रहता है कि सौंदर्य की श्रेणियाँ सर्वकालिक हैं या कालाधीन। बहुश्रुत है कि आदि काव्य के सृजन की प्रेरणा वाल्मीक को क्रोच पक्षी के रूदन से मिली। इस तरह मनुष्य जाति का दुःख-दर्द साहित्य की प्रेरणा का स्रोत है या मनुष्य का हर्ष साहित्य की मूल प्रेरणा है, निर्णय कठिन है। साहित्य के अनुशासन में इन्हीं सैद्धांतिक प्रश्नों पर अधिक व्यवस्थित रूप में विचार किया जाता है।

बदलती सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप साहित्यिक मान्यताओं में भी लगातार परिवर्तन दिखाई देता है, लेकिन मूल प्रश्नों का सैद्धांतिक कलेवर नहीं बदलता है। इसके साथ साहित्य अनुशासन को लगातार परिवर्तनशील सृजनात्मक जगत से स्वयं को जोड़े रखने की अनिवार्यता होती है क्योंकि नई साहित्यिक कृतियाँ लगातार नए मानकों को जन्म देती हैं।

इस तरह से साहित्य का अध्ययन मनुष्य के संवेदनात्मक जगत का विस्तार ही नहीं करता है, बल्कि कला और सौंदर्य जगत से मनुष्य का आत्मीय संबंध भी स्थापित करता है। साहित्य और भाषा के अंतर्संबंध मनुष्य को आलोचनात्मक, रचनात्मक और ज्ञानात्मक संवेदन बढ़ाने में भी मदद करते हैं। इसी के साथ यह अनिवार्य हो जाता है कि छात्र दूसरे साहित्येतर अनुशासनों जैसे समाज विज्ञान, मानविकी से साहित्य के अंतर को ठीक तरह से समझ पाए। इन दूसरे अनुशासनों का ज्ञान विद्यार्थी को विवेकशील, संवेदनशील और सृजनशील बनाने के साथ उनमें आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करता है। वैश्विकता और बंधुत्व के भाव को आत्मसात करना आज हर एक व्यक्ति के लिए आवश्यक है; इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य साहित्यिक ज्ञान के साथ विद्यार्थी को अच्छा नागरिक बनाने और उनमें एक स्वस्थ समाज के निर्माण की क्षमता को विकसित करना है। यह पाठ्यक्रम के अंतर्गत हिंदी साहित्य, भाषा, आलोचना और काव्यशास्त्र का अध्ययन छात्रों की सैद्धांतिक समझदारी को पुख्ता करता है, वहीं कविता, नाटक, कहानी, निबंध आदि का अध्ययन उन सिद्धांतों की व्यावहारिकता को समझने में मदद करता हैं।

1.2 पाठ्यक्रम योजना और विकास हेतु अधिगम आधारित दृष्टिकोण

भारतीय संविधान में देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया है । हिन्दी पढ़ने वाले छात्र को भाषा की क्षमता से परिचित होना जितना आवश्यक है, उतना ही दरपेश सामाजिक समस्याओं को समझने की क्षमता होनी भी जरूरी आज हम भूमंडलीकृत समाज के अंग हैं, अंतः हर एक तरह के पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थी को देश - विदेश के साहित्य

में हो रहे बदलाव से परिचित कराना भी हो जाता है। पाठ्यक्रम के जरिए व्यावसायिक योग्यता उत्पन्न करके बाज़ारवाद और भूमंडलीकरण की वैश्विक गति के बीच हिंदी की राष्ट्रीय प्रगति को सुनिश्चित किया जा सकेगा क्योंकि सशक्त भाषा के बिना किसी भी राष्ट्र की उन्नति संभव नहीं है। भारतेन्दु हरिश्चंद्र (1850) ने इसीलिए कहा था, 'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कै मूल'। यह पाठ्यक्रम वर्तमान संदर्भों के अनुकूल है, साथ ही साथ इस पाठ्यक्रम का रूप रोजगारपरक भी है। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को भाषा और साहित्य के व्यावहारिक अनुप्रयोग से अवगत करा सकेगा। हिंदी साहित्य की नई समझ और भाषा की व्यवहारिकता की जानकारी इसका प्रमुख ध्येय है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य भाषा और समाज के जटिल सम्बन्धों की पहचान कराना भी है, जिससे विद्यार्थी देश, समाज, राष्ट्र और विश्व के साथ बदलते समय में व्यापक सरोकारों से अपना सम्बन्ध जोड़ सके, साथ ही उसमें भाषा कौशल, लेखन और सम्प्रेषण क्षमता का विकास हो सके।

अधिगम परिणामों पर आधारित स्नातक पाठ्यक्रम के उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- स्नातक उपाधि के लिए क्षमता, आर्हता के साथ अधिगम परिणामों को सुनिश्चित करना।
- स्नातक कार्यक्रम के पाठ्यक्रम के अधिगम परिणामों (ज्ञान, क्षमता, मूल्य) की प्रकृति व स्तर को समझने में मदद करना; साथ ही साथ यह निर्धारित करना पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद छात्रों में कैसी क्षमताएँ विकसित होंगी।
- अधिगम परिणामों के राष्ट्रीय मानकों को सुनिश्चित करना तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अकादमिक मानकों की समतुल्यता से वैश्विक प्रतिस्पर्धा को सुनिश्चित करना और स्नातक छात्रों की पाठ्यक्रम गतिशीलता (दूसरे संस्थानों) को सुनिश्चित करना।
- उच्च शिक्षा के संस्थानों को अध्ययन-अध्यापन की रणनीति बनाने, छात्र के ज्ञानार्जन के स्तर के मूल्यांकन और अकादमिक पाठ्यक्रमों के मूल्यांकन और स्तर की नियमित समीक्षा के लिए महत्वपूर्ण संदर्भ बिन्दु निर्धारित करना।

1.3 पाठ्यक्रम योजना और विकास के मुख्य परिणामों का निर्धारण

अधिगम आधारित पाठ्यक्रम का ढाँचा उन अपेक्षित परिणामों और अकादमिक मानकों पर आधारित है, जिसकी पाठ्यक्रम के स्नातक उपाधिधारी छात्र से अपेक्षा की जाती है। पाठ्यक्रम योजना और विकास को रेखांकित करने वाले प्रमुख बिंदुओं में स्नातक क्षमता, कार्यक्रम के परिणाम, कार्यक्रम के विशिष्ट परिणाम और पाठ्यक्रम के परिणाम शामिल हैं।

1.3.1 स्नातक क्षमता

विश्वविद्यालय के सभी पाठ्यक्रमों का मुख्य जोर अनुशासनात्मक विशेषज्ञता और तकनीकी ज्ञान है। यही वह गुण है जो भविष्य में छात्रों को सामाजिक अच्छाई के प्रतिनिधि (प्रेरक) के रूप में निर्मित करेंगे। स्नातक-शिक्षा प्राप्त छात्र में निम्न गुण व विशेषता अपेक्षित हैं (होनी चाहिए)-

1. **अनुशासनात्मक ज्ञान**: एक या उससे अधिक अनुशासनों का व्यापक ज्ञान और उसकी समझदारी अर्जित करना।
2. **शोधकार्य कौशल:** उपयुक्त/ उचित प्रश्न पूछने की क्षमता के साथ उचित तरीके से समस्या को सामने रखना; उसके संश्लेष और अभिव्यक्ति की क्षमता के साथ अनुसंधात्मक बोध का होना।
3. **विश्लेषण और तार्किकता:** साक्ष्यों की विश्वसनीयता और प्रासंगिकता का मूल्यांकन करने का सामर्थ्य; अन्य के तर्कों में मौजूद तर्कगत असंगति व दोष को चिंह्नित करने में सक्षमता।
4. **आलोचनात्मक क्षमता:** ज्ञान के क्षेत्र में विश्लेषणात्मक विचारों को प्रयोग करने की क्षमता।
5. **समस्या समाधान:** अर्जित ज्ञान के आधार पर भिन्न किस्म की समस्याओं का अवधारणाओं के अनुप्रयोग के द्वारा समाधान करना।
6. **संचार कौशल:** विचारों को लिखित और मौखिक रूप से प्रभावी ढंग से व्यक्त करने की क्षमता।

7. **सूचना प्रौद्योगिकी/ डिजिटल साक्षरता:** विभिन्न अध्ययन परिस्थितियों में कंप्यूटर व संचार तकनीक (ICT) के प्रयोग में सक्षम होने के साथ विभिन्न सूचना स्रोतों के अधिगमन, मूल्यांकन और प्रयोग करने में सक्षम होना; तथा जानकारियों/तथ्यों के विश्लेषण के लिए उपयुक्त साफ्टवेयर का प्रयोग करने में सक्षम होना।
8. **स्व-निर्देशित शिक्षा:** स्वतंत्र रूप से कार्य करने की क्षमता, किसी परियोजना के लिए आवश्यक उपयुक्त संसाधनों की पहचान करना और परियोजना के पूरा होने तक इसका प्रबंधन करना।
9. **सहयोग / टीम वर्क:** विभिन्न समूहों के साथ सम्मानपूर्वक और प्रभावी तरीके से काम करने की क्षमता।
10. **वैज्ञानिक तर्किकता:** मात्रात्मक/गुणात्मक सूचनाओं (तथ्यों) को विश्लेषित करने के साथ उसकी व्याख्या तथा उससे निष्कर्ष निकालने की क्षमता का होना; और खुले दिमाग और तर्कपूर्ण दृष्टिकोण से विचारों, साक्ष्यों और अनुभवों का समालोचनात्मक मूल्यांकन करने में सक्षम होना।
11. **विचारपरकता:** स्व और समाज, दोनों ही स्तरों पर सजीव अनुभवों व स्व-चेतनशीलता के लिए आलोचनात्मक संवेदना होना।
12. **बहुसांस्कृतिक क्षमता:** बहुसांस्कृतिकता और वैश्विकता के मूल्यों और विश्वासों की जानकारी होना।
13. **नैतिक जागरूकता:** जीवन संचालक नैतिक मूल्यों के महत्व को पहचानने की क्षमता होने के साथ विभिन्न दृष्टिकोणों में निहित नैतिक मुद्दों को सैद्धांतीकृत करने की क्षमता और सभी कार्यों में नैतिक व्यवहार का प्रयोग करने में सक्षम होना।
14. **नेतृत्व तत्परता / गुण:** समूह या संगठन के कार्यों को निर्धारित करने की क्षमता के साथ दृष्टिकोण का निर्धारण; प्रेरणास्पद लक्ष्यों के निर्धारण में सक्षम होने के साथ उस समूह (टीम) के निर्माण में सक्षम होना जो इन कार्यों और लक्ष्यों को पूरा करने में सहायक हो; इसके साथ प्रभावी तरीके से समूह सदस्यों को उचित दिशा-निर्देश देने की प्रबंध क्षमता का प्रयोग करने में सक्षम होना।
15. **जीवनपर्यंत शिक्षा:** 'कैसे सीखे' को जानने के साथ उस ज्ञान और कौशल को अर्जित करने की क्षमता का होना जो कि जीवनपर्यंत सीखने-जानने की गतिविधियों में भागीदारी के लिए अनिवार्य होती है; इस गतिविधि की अनिवार्यता व्यक्तित्व-विकास, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक उद्देश्यों के लिए होने के साथ व्यवहारिक और कार्यस्थल की जरूरतों के मुताबिक ज्ञान/कौशल/पुनर्कौशल अर्जित करने के लिए होती है।

1.3.2 स्नातक कार्यक्रम (आनर्स) के लिए कार्यक्रम के लक्षित परिणाम (POs)

परिणाम लक्ष्य (POs) ऐसे विवरण हैं जो स्नातक कार्यक्रम के जरिए उपाधि प्राप्त छात्र में होने ही चाहिए। ये वे संकेतक/मानक हैं जो कि स्नातक उपाधि छात्रों के ज्ञान, कौशल और गुणवत्ता को इंगित करते हैं। ये निम्नवत हैं:

1. **गहन ज्ञान**: अध्ययन क्षेत्र से संबंधित अवधारणाओं की समझदारी और इससे संबंधित प्रक्रिया की जानकारी के साथ संदर्भित क्षेत्र के ज्ञान को अभिव्यक्त करना और दूसरे अनुशासनों और विषयगत अध्ययन से उसके संबंध की जानकारी का होना।
2. **विशिष्ट ज्ञान और कौशल**: अर्जित विशेषज्ञता के क्षेत्र में प्रक्रियागत ज्ञान और क्षमता को प्रदर्शित करने की क्षमता के साथ उस क्षेत्र में हुए विकास की समझदारी का होना और इस विशेषज्ञता के क्षेत्र में हुए नवीनतम् विकास की आलोचनात्मक समझदारी का होना; विशेषज्ञता के क्षेत्र में पहले से निर्धारित तकनीकों के विश्लेषण की क्षमता के साथ उसके प्रति जिज्ञासा का होना।
3. **विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक सोच:** विचारों की एक विस्तृत श्रृंखला और जटिल समस्याओं और उससे जुड़े दूसरे पहलुओं को जानने के साथ उसके विश्लेषण और आलोचनात्मक चिंतन में सक्षम होना।
4. **अनुसंधान और नवाचार:** विशेषज्ञता के क्षेत्र में वर्तमान शोध की स्थिति के बारे में व्यापक ज्ञान की अभिव्यक्ति; शोध समस्याओं की पहचानने की आलोचकीय क्षमता के साथ विशेषज्ञता के क्षेत्र में दूसरे स्रोतों की एक विस्तृत

श्रृंखला से प्रासंगिक जानकारी एकत्र करना, परिणामाधारित शोधों को सूत्रबद्ध करने के लिए उचित पद्धति का प्रयोग करते हुए आँकड़ों के स्रोत की पहचान के साथ उसका विश्लेषण और व्याख्या करने में सक्षमता।

5. **अंतरअनुशासनिक दृष्टिकोण:** बौद्धिक खुलेपन के प्रति प्रतिबद्धता और विषयगत क्षेत्र में हो रहे विकास की समझदारी।
6. **संवाद क्षमता:** अनुशासनात्मक ज्ञान को व्यक्त करने की प्रभावी वाचिक और लिखित क्षमता के होने के साथ विषय से संबंधित मुख्य अवधारणाओं, संरचनाओं और तकनीकों का प्रयोग करते हुए अध्ययन परिणामों को सटीक तरीके से व्यक्त करने की क्षमता का होना।
7. **कैरियर विकास:** उच्च शिक्षा और रोजगार के लिए आवश्यक शैक्षणिक, पेशेवर, विशेषज्ञ कौशल और रोजगार योग्यता में दक्षता का होना।
8. **समूह कार्य क्षमता:** अंतरवैयक्तिक कौशल के साथ नेतृत्व गुण और समूह में कार्य करने की क्षमता।
9. **समाज और राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता:** मनुष्यता के सामने दरपेश स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मौजूद सामाजिक, पर्यावरणिक, मानवीय और दूसरे मुद्दों की पहचान करना; राष्ट्रीय संस्कृति के बहुलतावादी चरित्र की महत्ता को स्वीकरने के साथ राष्ट्रीय एकता के मूल्य को पहचानना।

1.3.3 पाठ्यक्रम के विशिष्ट परिणाम केंद्रित लक्ष्य (PSOs)- हिन्दी

पाठ्यक्रम केंद्रित विशिष्ट परिणामों में विषय केंद्रित कौशल और सामान्य कौशल के शामिल होने के साथ स्थानांतरीय वैश्विक कौशल और दक्षताएँ भी शामिल हैं। छात्रों के लिए इन सभी विशिष्टताओं को अर्जित करना स्नातक उपाधि के लिए अनिवार्य है। पाठ्यक्रम केंद्रित अपेक्षित परिणामों का मुख्य जोर भविष्य के अध्ययन, रोजगार और नागरिक जीवन के लिए छात्रों को ज्ञान और कौशल को विकसित करना भी है। ये परिणाम विभिन्न विश्वविद्यालयों के अध्ययन स्तर और अकादमिक मानकों को तुलनात्मक रूप से स्पष्ट करने में सहायक होते हैं और पाठ्यक्रम का अध्ययन करने वाले स्नातक छात्रों की योग्यता की एक बृहतर तस्वीर सामने लाते हैं। इन परिणामों का अर्जन कार्यक्रम के सभी पाठ्यक्रमों के स्तर पर समग्र रूप से समाकलित होता है।

1. **आधारभूत अवधारणा:** साहित्य का अर्थ, उसकी उपयोगिता के साथ मनुष्य-जीवन में उसकी भूमिका को समझना।
2. **इतिहासबोध:** साहित्य अध्ययन का अनिवार्य अंग इतिहासबोध है क्योंकि अतीत की सामाजिक, आर्थिक, राजनीति और सांस्कृतिक परिस्थितियों को समझे बिना साहित्य को समझा नहीं जा सकता है।
3. **साहित्यिक रूपाकार:** साहित्यिक रूपाकारों से तात्पर्य रचनात्मक अभिव्यक्ति के विभिन्न रूप जैसे कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि से हैं। इन रूपाकारों की विशिष्ट प्रकृति और इसके साहित्यिक मूल्य को समझना।
4. **आलोचना:** साहित्यिक कृतियों के मूल्यांकन आधारों से परिचय।
5. **आलोचनात्मक दृष्टिकोण:** इतिहास और साहित्य कृतियों के अंतर्संबंध का निर्धारण करने योग्य विवेक का होना।
6. **सामाजिक परिवर्तन:** साहित्यिक रूपाकारों में होने वाले कालाधारित परिवर्तनों को समझना।
7. **साहित्यिक-मूल्यांकन पद्धतियों का अनुप्रयोग:** काव्यशास्त्र के सिद्धांतों के व्यवहारिक अनुप्रयोग में दक्षता।
8. **रचनात्मक क्षमता:** कला रूपों की प्रकृति को समझना और रचनात्मक तरीके से साहित्य के अवगाहन में सक्षम होना।
9. **शोधोन्मुखता व नवोंमेष:** साहित्य और साहित्येतिहास के क्षेत्र में अनुसंधान के भाव का होना।
10. **साहित्य और समाज संबंध:** साहित्य के समाज के रिश्ते को समझना।
11. **भाषिक क्षमता:** छात्रों में संवाद क्षमता होने के साथ जटिल आलोचनात्मक विचारों को अभिव्यक्त करने में सक्षम होना। इसके साथ भाषा के प्रायोगिक रूप (प्रयोजनमूलक) में दक्ष होना।

1.3.4 कार्यक्रम केंद्रित लक्षित परिणाम

कार्यक्रम केंद्रित लक्षित परिणाम

कार्यक्रम केंद्रित लक्षित परिणाम	101	102	201	202	301	302	303	401	402	403	501	502	601	602
आधारभूत अवधारणा	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x
इतिहासबोध	x	x		x	x	x		x	x		x	x	x	x
साहित्यिक रूपाकार	x				x	x		x	x		x		x	x
आलोचना		x		x										x
आलोचनात्मक दृष्टिकोण												x		x
सामाजिक परिवर्तन		x	x	x		x	x	x		x	x	x		x
साहित्य-मूल्यांकन पद्धतियों का अनुप्रयोग				x		x	x	x	x	x	x	x		x
रचनात्मक क्षमता		x		x	x	x	x	x	x	x	x	x		x
शोधोन्मुखता व नवोंमेष		x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x		x
साहित्य-समाज संबंध	x			x		x	x	x	x		x			x
भाषिक क्षमता	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x

कार्यक्रम केंद्रित लक्षित परिणाम- ऐच्छिक और विभाग केंद्रित ऐच्छिक विषय

कार्यक्रम केंद्रित लक्षित परिणाम	103	203	304	404	503	504	505	506	603	604	605	606
आधारभूत अवधारणा	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x
इतिहासबोध	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x		x
साहित्यिक रूपाकार	x			x	x	x					x	x
आलोचना										x		
आलोचनात्मक दृष्टिकोण		x										
सामाजिक परिवर्तन		x	x	x			x		x			x
साहित्य-मूल्यांकन पद्धतियों का अनुप्रयोग	x	x	x	x	x		x	x	x	x	x	x

रचनात्मक क्षमता		x	x	x	x		x		x	x	x	x
शोधोन्मुखता व नवोंमेष	x	x	x	x	x		x	x	x	x	x	
साहित्य-समाज संबंध			x	x			x	x	x	x	x	x
भाषिक क्षमता	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x

1.4 **अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया**

कॉटन विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में छात्र-केंद्रित शिक्षण प्रक्रिया को महत्व दिया गया है जिससे अर्जित ज्ञान छात्र के अनुभव का भी हिस्सा हो पाए। हर एक किस्म के शैक्षणिक व्याख्यान की प्रकृति संवादात्मक है, जिसमें छात्रों की सहभागिता के साथ प्रश्नोत्तर व संवाद के लिए व्याख्यान के अंत में समय निर्धारित है। पारंपरिक कक्षाओं के अलावा, ऑनलाइन माध्यम से भी व्याख्यानों की व्यवस्था है, जिससे छात्र सभी शिक्षकों से अपने संशयों और जिज्ञासाओं का समाधान कर सकते हैं। सूचना-तकनीक सुविधाओं का प्रयोग करते हुए पावर-पॉइंट, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म तथा दूसरे अन्य प्लेटफार्मों के साथ आईसीटी के सुविधाओं का उपयोग करते हैं।

इस विभाग ने सहभागी शिक्षण पद्धतियों को अपनाया है, जिसमें संगोष्ठियाँ, प्रस्तुतियाँ और समूह-चर्चाएँ शामिल हैं। ये सहभागी शिक्षण पद्धतियाँ लगभग सभी सत्रों के पाठ्यक्रमों में शामिल हैं। इनके अलावा छात्रों में ज्ञान की वृद्धि, नवीन विचारों से अवगत होने के लिए तथा उनमें वैश्विक, अकादमिक और अनुसंधान प्रगति से परिचित कराने के लिए विशेष कार्यशालाएँ, आमंत्रित विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान, राष्ट्रीय / अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार आदि का आयोजन किया जाता है।

अल्पकालिक परियोजना कार्य, अनुसंधान की परियोजनाएं, असाइनमेंट आदि पाठ्यक्रमों के अभिन्न घटक हैं, जो छात्रों को व्यावहारिक समस्याओं को हल करने में सक्षम बनाते हैं। इन पद्धतियों से इनके विषय संबंधित ज्ञान में वृद्धि करने की कोशिश की जाती है।

1.5 **मूल्यांकन पद्धति**

छात्रों की प्रगति के मूल्यांकन हेतु पाठ्यक्रम की प्रकृति के अनुकूल विभिन्न तरीकों के मूल्यांकन पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है। पाठ्यक्रम के विशिष्ट परिणाम लक्ष्यों के मूल्यांकन के लिए निम्न पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है: लिखित परीक्षाएँ समस्या आधारित गृहकार्य (असाइनमेंट); पुस्तक समीक्षाएँ; लघु शोध निबंध; मौखिक प्रस्तुतियाँ (सेमीनार); मौखिक प्रश्नोत्तर; कंप्यूटर आधारित परीक्षाएँ आदि।

भाग- II

हिन्दी में स्नातक कार्यक्रम की संरचना

चयन आधारित क्रेडिट व्यवस्था की रूपरेखा:

पाठ्यक्रम के प्रत्तेक कोर्स निम्न श्रेणियों के हैं-

1. आधार कोर्स (Core Course): इस श्रेणी के कोर्स वे हैं, छात्रों के लिए जिनका अध्ययन अनिवार्य है.

2. ऐच्छिक कोर्स (Elective Course): सामान्य रूप से इस श्रेणी के कोर्स वे होते हैं जिनका छात्र अपनी रूचि के अनुरूप चयन करते हैं। इन बहुत अधिक प्रवीणता विशेषज्ञतापूर्ण कोर्स भी शामिल होते हैं। इसके साथ इन कोर्सो की प्रकृति ऐसी होती है जिससे छात्रों को दूसरे अनुशासनों/विषयों की जानकारी भी हो पाती है।

2.1 अनुशासन केंद्रित ऐच्छिक विषय (DSE): ऐच्छिक कोर्स मुख्य अनुशासन-अध्ययन क्षेत्र से निर्धारित होते हैं। विश्वविद्यालय इस विषय में अंतरअनुशानात्मक प्रकृति के पाठ्यक्रमों को भी प्रस्तावित कर सकता है।

2.2 लघु शोध प्रबंध- निबंध/परियोजना कार्य: इस श्रेणी के ऐच्छिक पाठ्यक्रमों को विशेषज्ञतापूर्ण ज्ञान हेतु निर्मित किया गया है। इसमें विशेषज्ञा के आधार पर परियोजना कार्य किया जा सकता है, जिसमें विभाग के अध्यापक या संकाय सदस्य मदद करते हैं।

2.3 सामान्य ऐच्छिक (GE) विषय: इस श्रेणी के विषय प्रायः अनुशासन की सीमा में नहीं होते हैं और इनका उद्देश्य छात्र को ज्ञान के बृहतर परिप्रेक्ष्य से परिचित कराना होता है।

अनुशासन (विभाग) द्वारा संचालित विषय दूसरे अनुशासनों के लिए लिए सामान्य ऐच्छिक विषय के रूप में चिंह्नित होते हैं।

3. क्षमता संवर्द्धक कोर्स (AEC): क्षमता संवर्द्धक कोर्स (AEC) दो किस्म के होते हैं: क्षमता संवर्द्धक अनिवार्य कोर्स (AECC) और कौशल संवर्द्धक कोर्स (SEC)। इस श्रेणी के कोर्सों की प्रकृति ज्ञान संवर्धन की होती है। ये सभी अनुशासनों के लिए अनिवार्य हैं। वहीं कौशल संवर्द्धक कोर्स (SEC) मूल्य-आधारित होते हैं जिनका उद्देश्य प्रशिक्षण, दक्षता और कौशल में अभिबृद्धि करना होता है।

3.1 क्षमता संवर्द्धक अनिवार्य कोर्स (AECC): पर्यावरण विज्ञान, अंग्रेजी संवाद/ आधुनिक भारतीय भाषागत संवाद।
3.2 कौशल संवर्द्धक कोर्स (SEC): कौशल संवर्द्धन के उद्देश्य से निर्मित कोर्सो में इनका चुनाव किया जा सकता है।

स्नातक पाठ्यक्रमों में शोधोन्मुखता

परियोजना कार्य को विशेष पाठ्य माना जाता है। इसमें वास्तवित जीवन परिस्थितियों से संबंधित परिस्थितियों/समस्याओं को देखते हुए अनुशासन केंद्रित ज्ञान के अनुप्रयोग की अपेक्षा की जाती है। परियोजना कार्य 6 क्रेडिट का होगा। परियोजना कार्य किसी विशेष पत्र की जगह अध्ययन करने के लिए भी दिया जा सकता है।

स्नातक पाठ्यक्रम विवरण और क्रेडिट वितरण (आनर्स):

स्नातक उपाधि के लिए न्यूनतम 140 क्रेडिट की आवश्यकता होगी। इसका वितरण निम्नवत् है:
(14 Core papers × 6 credit each) +(4GE papers × 6credit each)+ (2 AECC papers × 2 credit each) + (2 SEC papers × 2 credit each) + (4 DSE papers × 6 credits each) = 140 Credits

Course		No of Papers	Credits	
			Theory+ Practical	**Theory + Tutorial**
I. आधार पाठ्य		14	14×(4+2) = 84	14×(5+1) = 84
II. ऐच्छिक पाठ्य कुल: 8 पेपर	**A. अनुशासन केंद्रित विशेष ऐच्छिक विषय (DSE)**	4	4×(4+2) = 24	4×(5+1) =24
	B. सामान्य ऐच्छिक विषय (GE) (अंतरअनुशासनिक)	4	4×(4+2) = 24	4×(5+1) =24
III. क्षमता संवर्द्धक पाठ्य (न्यूनतम 2, अधिकतम 4)	**A. क्षमता संवर्द्धक अनिवार्य पाठ्य (AECC)**	2	2×(2+0) =4	2×(2+0) =4
	B. कौशल संवर्द्धक पाठ्य (SEC)	2	2×(2+0)=4	2×(2+0)=4
		26	**Total credit= 140**	**Total credit= 140**

*Wherever there is a practical there will be no tutorial and vice-versa.
* Figures in the parenthesis indicate the credits

सेमेस्टरवार पेपर और क्रेडिट वितरण:

कार्यक्रम: स्नातक (आनर्स)

स्नातक उपाधि के लिए न्यूनतम 140 क्रेडिट की आवश्यकता होगी। इसका वितरण निम्नवत् है:
(14 Core papers × 6 credit each) +(4GE papers × 6credit each)+ (2 AECC papers × 2 credit each) + (2 SEC papers × 2 credit each) + (4 DSE papers × 6 credits each) = 140 Credits

सेमेस्टर	**आधार पाठ्यक्रम** ***कुल- 14***	**क्षमता संवर्द्धक अनिवार्य पेपर (AECC)** ***कुल-2***	**कौशल संवर्द्धक पेपर (SEC)** ***कुल- 2***	**ऐच्छिक: अनुशासन केंद्रित विशेष पेपर (DSE)** ***कुल– 4***	**ऐच्छिक: सामान्य प्रकृति के पाठ्य (GE)** ***कुल– 4***
I	C 1 Credit- 6	*English Communication/ MIL for BA Course **Environmental Science for BSc Course Credit- 2			GE-1 Credit- 6
	C 2 Credit- 6				
II	C 3 Credit- 6	*English Communication/MIL			GE-2 Credit- 6

	C 4 Credit- 6	for BSc Course **Environmental Science for BA Course Credit- 2			
III	C 5 Credit- 6		SEC -1 Credit- 2		GE- 3 Credit- 6
	C 6 Credit- 6				
	C 7 Credit- 6				
IV	C 8 Credit- 6		SEC -2 Credit- 2		GE-4 Credit- 6
	C 9 Credit- 6				
	C 10 Credit- 6				
V	C 11 Credit- 6			DSE-1 Credit- 6	
	C 12 Credit- 6			DSE -2 Credit- 6	
VI	C 13 Credit- 6			DSE -3 Credit- 6	
	C 14 Credit- 6			DSE -4 Credit- 6	

क्षमता संवर्द्धक अनिवार्य कोर्स (AECC) का चयन:

1.स्नातक (आनर्स):
प्रथम सेमेस्टर के लिए -
(a)आधुनिक भारतीय भाषाओं (MIL) को आधार पाठ्य के रूप में अध्ययन करने वाले छात्र क्षमता संवर्द्धक कोर्स (AECC) के रूप में अंग्रेजी का चुनाव करेंगे।
(b) आधार विषय के रूप में अंग्रेजी का अध्ययन करने वाले छात्र: आहर्ता परीक्षा में जिस भाषा का अध्ययन किया था, उसका अध्ययन करेंगे, अन्यथा क्षमता संवर्द्धक कोर्स (AECC) के रूप में अंग्रेजी का चुनाव करेंगे।
(c) आधुनिक भारतीय भाषा (MIL) या अंग्रेजी में किसी का भी अध्ययन न करने वाले छात्र क्षमता संवर्द्धक कोर्स (AECC) के रूप में उस आधुनिक भारतीय भाषा (MIL) का कोर्स चुनेंगे जिसका उन्होंने अपनी आहर्ता परीक्षा में अध्ययन किया था, अन्यथा वे क्षमता संवर्द्धक कोर्स (AECC) के रूप में संवाद अंग्रेजी का चुनाव करेंगे।
दूसरे सेमेस्टर के लिए-

*पर्यावरण विज्ञान का अध्ययन सभी छात्रों के लिए अनिवार्य है।

हिन्दी पाठ्यक्रम की संरचना (स्नातक कार्यक्रम)

- 1 क्रेडिट = 1 सैद्धांतिक व्याख्यान प्रति सप्ताह एक घण्टा (L)
- 1 क्रेडिट = 1 ट्यूटोरियल प्रति सप्ताह एक घण्टा (T)
- 1 क्रेडिट = 1 प्रयोगिक कक्षा प्रति सप्ताह दो घण्टा (P)

प्रति सेमेस्टर **15** सप्ताह अध्ययन कार्य के लिए निर्धारित है

CORE

Paper Code	**Paper Title**	**L+T+P**
Semester I		
HIN101C	हिन्दी साहित्य का इतिहास (आदिकाल व मध्यकाल)	5+1+0
HIN102C	हिन्दी कविता (आदिकाल व मध्यकाल)	5+1+0
Semester II		
HIN201C	हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि	5+1+0
HIN202C	हिन्दी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)	5+1+0
Semester III		
HIN301C	भारतीय काव्यशास्त्र	5+1+0
HIN302C	आधुनिक हिन्दी कविता: नवजागरण से छायावाद तक	5+1+0
HIN303C	हिन्दी कहानी: उद्भव और विकास	5+1+0
Semester IV		
HIN401C	हिन्दी आलोचना: उद्भव और विकास	5+1+0
HIN402C	आधुनिक हिन्दी कविता: प्रगतिवाद से समकालीन कविता	5+1+0
HIN403C	पाश्चात्य काव्यशास्त्र	5+1+0
Semester V		
HIN501C	हिन्दी उपन्यास: उद्भव-विकास और विस्तार	5+1+0
HIN502C	हिन्दी नाटक व एकांकी	5+1+0
Semester VI		
HIN601C	आधुनिक गद्य विधाएँ	5+1+0
HIN602C	तुलनात्मक साहित्य (असमीया साहित्य के विशेष संदर्भ में)	5+1+0

Discipline Specific Elective

Semester V

HIN503DSE	स्त्री साहित्य	5+1+0
HIN504DSE	लोक साहित्य	5+1+0

Semester VI

HIN603DSE	दलित विमर्श	5+1+0
HIN604DSE	तुलनात्मक कृष्ण भक्ति काव्यधारा	5+1+0

Generic Electives

Semester I

HIN 103E	हिन्दी साहित्य (कविता और कहानी)	5+1+0

Semester II

HIN203E	प्रयोजनमूलक हिन्दी	5+1+0

Semester III

HIN 304 E	आधुनिक हिन्दी कविता और कहानी	5+1+0

Semester IV

HIN 404E	हिन्दी साहित्य और सिनेमा	5+1+0

Ability Enhancement Compulsory Course (AECC)

Semester I

HIN 104A	हिन्दी साहित्य: कविता और कहानी	1+1+0

Semester II

HIN 204 A	आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य	1+1+0

Skill Enhancement Course

Semester III

HIN 001SEC	अनुवाद: सिद्धांत और प्रयोग	2+0+0

Semester IV

HIN 002SEC	कार्यालयी हिन्दी	2+0+0

Semester I

Paper Code: **HIN101C**

Paper Title: **हिन्दी साहित्य का इतिहास (आदिकाल व मध्यकाल) (Credit: 5+1+0=6)**

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को हजार वर्षों के हिन्दी साहित्य से परिचित करवाना है। छात्रों को हिन्दी साहित्य के इतिहास में परम्परा और प्रगति के संबंध को भी समझाना है। हिन्दी साहित्य के विभिन्न कालखंडों में से आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल की परिस्थितियों, पृष्ठभूमि तथा काव्यधाराओं से छात्रों को परिचित करवाना है।

अपेक्षित आधिगम परिणाम:

- साहित्य- इतिहास के अंतर्संबंध को समझ पायेंगे।
- इतिहास लेखन की परंपरा को जान पायेंगे।
- हिन्दी भाषा और साहित्य के निर्माण की शुरूआत से परिचित हो सकेंगे।
- साहित्य के स्वरूप और प्रवृत्तियों को पहचान पायेंगे।
- आदिकाल, भक्तिकाल और रीतिकाल से परिचित होंगे।

ईकाई	पाठ्यसामग्री	व्याख्यान
I	हिन्दी साहित्यः परिचय, इतिहास लेखन व लेखन की परंपरा, काल विभाजन	10
II	साहित्यिक कालः आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल (सीमांकन एवं नामकरण, परिस्थितियाँ, पृष्ठभूमि, काव्य-प्रवृत्तियाँ)	10
III	आदिकालः सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, जैन साहित्य, रासो साहित्य, लौकिक साहित्य)	10
IV	भक्तिकालः सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, भक्ति आंदोलन, निर्गुण काव्यधारा (ज्ञानाश्रयी एवं प्रेमाश्रयी	20
V	सगुण काव्यधारा (रामभक्ति एवं कृष्णभक्ति)	15
VI	रीतिकालः रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त	10

अध्ययन सामग्री

रामचंद्र शुक्ल, *हिंदी साहित्य का इतिहास*, दिल्ली, प्रकाशन संस्थान

हजारी प्रसाद द्विवेदी, *हिंदी साहित्य की भूमिका*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

हजारी प्रसाद द्विवेदी, *हिंदी साहित्यः उद्भव और विकास*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

हजारी प्रसाद द्विवेदी, *हिंदी साहित्य का आदिकाल*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, *हिंदी साहित्य का अतीत*, दिल्ली, वाणी प्रकाशन

नगेन्द्र (संपा.), *हिंदी साहित्य का इतिहास*, दिल्ली, मयूर पेपरबैक्स

राजबली पांडेय (व अन्य), *हिंदी साहित्य का बृहत इतिहास* (17 खण्ड), वाराणसी, नागरी प्रचारिणी सभा

Paper Code: HIN 102C

Paper Title: हिन्दी कविता: आदिकाल व मध्यकाल (Credit: 5+1+0=6)

यह प्रश्नपत्र स्नातक के छात्रों को ध्यान में रखते हुए प्राचीन व मध्यकालीन हिन्दी कविता का एक विहंगम सर्वेक्षण है। इस प्रश्नपत्र में हिन्दी के आरंभिक दौर में विकसित हुई हिन्दी कविता का प्रतिनिधि अध्ययन प्रस्तावित है। हिन्दी में भाषिक संक्रमण के साथ विभिन्न साहित्यिक आंदोलनों का हिन्दी कविता पर किस रूप में प्रभाव पड़ा है, यह भी पाठ्यचर्या का विषय है। इस पाठ्यचर्या में हिन्दी कविता के प्रतिनिधिक कवियों की प्रतिनिधिक रचनाओं का भी अध्ययन प्रस्तावित है, जिसका उद्देश्य छात्रों में काव्य-संवेदना का विकास करना भी है।

अपेक्षित आधिगम परिणाम

1. छात्र हिन्दी कविता की परंपरा से परिचित हो सकेंगे।
2. हिन्दी कविता के विभिन्न रूपों के साथ सामाजिक परिस्थितियों के साहित्य पर प्रभाव को समझने में समझम होंगे।
3. भक्ति आंदोलन की कविता के मूल स्वर को समझ पाएंगे।
4. रीति और भक्ति कविता में अंतर को समझने में सक्षम होंगे।

ईकाई	पाठ्यसामग्री	व्याख्यान
I	रासो साहित्य (चंदबरदायी: पृथ्वीराज रासो, संपा. हजारीप्रसाद द्विवेदी, नामवर सिंह, शशिवृता विवाह प्रस्ताव- पाँच पद) - विद्यापति (विद्यापति पदावली, संपा. रामवृक्ष बेनीपुरी, आरंभिक 10 पद) व्यक्तित्व व कृतित्व वंदना: राधा, श्री कृष्ण प्रेम (प्रेम), राधा का प्रेम (प्रेम), राधा का वर्णन (श्रृंगार)	15 Classes
II	कबीर (हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा संपादित कबीर के आरंभिक 10 पद)	10 Classes
III	सूरदास (सूरसागर- संपा. नंददुलारे बाजपेई) पद- छंद-138, 153 (विनय), 110, 115 (वात्सल्य), 672, 673 (श्रृंगार)	10 Classes
IV	तुलसीदास (कवितावली, उत्तरकांड, पद 89-98)	15 Classes
V	केशवदास (प्रिया प्रकाश- ला. भगवानदीन) कवि प्रिया: तीसरा प्रभाव (1, 2, 4, 5), पांचवा प्रभाव (1, 10), छठा प्रभाव (56, 66, 69)	15 Classes
VI	बिहारी (बिहारी रत्नाकर- जगन्नाथदास रत्नाकर)	10 Classes

	(छंद: 1, 62, 103, 127, 128,143, 180, 347, 363, 388)	

अध्ययन सामग्री

रामस्वरूप चतुर्वेदी, *मध्यकालीन हिन्दी काव्यभाषा*, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन

रामस्वरूप चतुर्वेदी, *हिन्दी काव्य संवेदना का विकास*, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन

रामस्वरूप चतुर्वेदी, *हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास*, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन

रामचंद्र शुक्ल, *हिन्दी साहित्य का इतिहास,* इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन

लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, *हिंदी साहित्य की भूमिका*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

रामविलास शर्मा, *भारतेंदु युग*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

रामचंद्र तिवारी, *मध्यकालीन काव्य-साधना*, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन

रामचंद्र तिवारी, *कबीर मीमांसा*, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन

बच्चन सिंह (सं.), *बिहारी रत्नाकर*, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन

Paper Code: **HIN103E**

Paper Title: **सृजनात्मक लेखन के विविध क्षेत्र (Credit: 5+1+0=6)**

हिन्दी पत्रकारिता के परिचय के साथ पत्रकारिता की भाषा से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दों का अध्ययन इस पाठ्यक्रम का हिस्सा है।फीचर लेखन, रिपोर्ट से लेकर साक्षात्कार जैसी विधाओं के सैद्धांतिक और प्रायोगिक पहलुओं के अध्ययन पर इसपाठ्यक्रम में जोर दिया गया है।

अपेक्षित आधिगम परिणाम

1. इस पाठ्यक्रम में हिन्दी से जुड़ी रोजगारपरक अनुप्रयोगों का अध्ययन प्रस्तावित है।
2. हिंदी में फीचर लेखन, रिपोर्ट से लेकर साक्षात्कार जैसी विधाओं के जानकारी के माध्यम से आगामी भविष्य में कार्यालयों के कार्यों में सहायक होगा।

ईकाई	पाठ्यसामग्री	व्याख्यान
I	जनसंचार माध्यम : अर्थ, परिभाषा, महत्व	15
II	संचार के प्रकार, जनसंचार की विशेषताएं, भारत में जनसंचार माध्यमों का विकास	15
III	पत्रकारिता: अर्थ, पत्रकारिता के प्रकार, प्रवृतियाँ, प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ, समाचार के तत्व	10
IV	फीचर लेखन: फीचर लेखन का अर्थ, फीचर के प्रकार, फीचर और समाचार में अंतर	10

V	मीडिया: अर्थ, स्वरूप, प्रकार, मीडिया का महत्व, सोशल मीडिया का विकास एवं प्रभाव	10
VI	साक्षात्कार: अर्थ, महत्व, उपयोगिता	15

अध्ययन सामग्री

संजय द्विवेदी, *मीडिया भूमंडलीकरण और समाज*, दिल्ली

अजय कुमार सिंह, *पत्रकारिता*, दिल्ली, लोकभारती प्रकाशन

अनुराधा, *न्यू मीडिया - इंटरनेट की भाषायी चुनौतियाँ और संभावनाएँ*, दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन

रामचन्द्र तिवारी, *हिन्दी का गद्य साहित्य*, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन

Paper Code: **HIN104A**

Paper Title: **हिन्दी साहित्य (कविता और कहानी) (Credit: 2+0+0=2)**

इस पाठ्यक्रम के जरिए पाठकों में हिंदी साहित्य के मध्यकालीन कविता और समकालीन कविता की समझ विकसित हो सकेंगी तथा वे हिन्दी गद्य के कहानी-विधा, इसके परम्परा और तत्व से भी परिचित हो सकेंगे।

अपेक्षित आधिगम परिणाम

1. पाठक हिन्दी काव्य विधा से परिचित होगें।
2. हिंदी साहित्य के प्रमुख मध्यकालीन कवियों के बारे जान सकेंगे।
3. समकालीन कविता और कहानी के विषयवस्तु को जान पायेंगे।
4. पाठक हिन्दी कहानी विधा से परिचित हो सकेंगे।

ईकाई	पाठ्यसामग्री	व्याख्यान
I	कविताएँ: शंकरदेव के बरगीत (1,2,3,4,5), कबीरदास के साखी (1,2,3,4,5), सूरदास के पद (1,2,3,4,5), माखनलाल चतुर्वेदी (पुष्प की अभिलाषा), सूर्यकांत त्रिपाठी निराला (भिक्षुक), महादेवी वर्मा (जाग तुझको दूर जाना)	15
II	कहानियाँ: कफन (प्रेमचंद), आकाशद्वीप (प्रसाद), पाजेब (जैनेन्द्र कुमार), परदा (यशपाल), रोज़ (अज्ञेय)	15

अध्ययन सामग्री

भूपेन्द्र राय चौधरी, *हिन्दी काव्य सुधा*, गुवाहाटी, गौहाती विश्वविद्यालय

चितरंजन मिश्र, *कथाभूमि*, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

Semester II

Paper Code: **HIN201C**

Paper Title: **हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि (Credit: 5+1+0=6)**

इस पाठ्यक्रम में छात्रों को भाषा के विविध पक्षों का अध्ययन कराया जाएगा। बहु-भाषिक भारतीय परिवेश में यह महत्वपूर्ण है कि भारतीय भाषाओं से छात्रों का परिचय हो। इस पाठ्यक्रम में छात्र भारतीय आर्य भाषाओं के वर्गीकरण से परिचित हो पाएंगे। इसके साथ ही हिन्दी भाषा के उद्भव और विकास के बारे में अध्ययन प्रस्तावित है।

हिन्दी की सभी बोलियों का विस्तृत अध्ययन पाठ्यचर्चा का अंग है। लिपि का विकास और भारत में प्रचलित विभिन्न लिपियों की जानकारी का अध्ययन भी इस पाठ्यक्रम में शामिल है।

अपेक्षित अधिगम परिणाम

1. विद्यार्थियों को भाषा के स्वरूप और महत्त्व का ज्ञान प्राप्त होगा।
2. भारत को एक सूत्र में बाँधनेवाली हिंदी भाषा की विविध बोलियों से परिचितहो सकेंगे।
3. विद्यार्थियों को हिंदी के अर्थ-विकास की जानकारी प्राप्त हो सकेगी।नागरी लिपि का अपेक्षित ज्ञान प्राप्त होगा।

ईकाई	पाठ्यसामग्री	व्याख्यान
I	भाषा : परिभाषा उत्पत्ति के सिद्धान्त, परिवर्तन के कारण विशेषताएँ, विविध रूप	10
II	भारतीय आर्यभाषा : प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक	10
III	हिन्दी भाषा का विकास : हिन्दी का आरंभिक रूप, हिन्दी का अर्थ, हिन्दी का उद्भव एवं विकास ।	15
IV	हिन्दी भाषा : हिन्दी भाषा का क्षेत्र, हिन्दी की विभाषाएँ एवं बोलियां	10
V	लिपि : परिभाषा, आरंभिक स्वरूप व आवश्यकता, विभिन्नरूप (चित्रलिपि, भावलिपि व ध्वनिलिपि), भाषा व लिपि का संबंध, भारत में लिपि का विकास	15

VI	देवनागरी लिपि : परिचय व विकास, देवनागरी लिपि मानकीकरण, आदर्श लिपि के गुण और देवनागरी लिपि की विशेषताएँ, लिपि व कंप्यूटर	15

अध्ययन सामग्री

बाबूराम सक्सेना, *सामान्य भाषाविज्ञान*, दिल्ली

आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा/दीप्ति शर्मा, *भाषाविज्ञान की भूमिका*, दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन

भोलानाथ तिवारी, *भाषाविज्ञान*, दिल्ली, वाणी प्रकाशन

भोलानाथ तिवारी, *हिंदीभाषा का इतिहास*, दिल्ली, वाणी प्रकाशन

भोलानाथ तिवारी, *हिन्दी भाषा*, दिल्ली, वाणी प्रकाशन

हरदेव बाहरी, *हिंदी भाषा: उद्भव, विकास और रूप*, दिल्ली

राजमणि शर्मा, *हिंदी भाषा: इतिहास और स्वरूप*, दिल्ली

उदयनारायण तिवारी, *हिंदी भाषा का उद्गम और विकास*, दिल्ली

Paper Code: **HIN202C**

Paper Title: **हिन्दी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल) (Credit: 5+1+0=6)**

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल से अवगत करवाना है। आधुनिक काल में आयी नवजागरण की लहर के व्यापक स्वरूप एवं उसके प्रभाव से परिचित करवाना है। साथ ही छात्रों को आधुनिकयुगीन विभिन्न काव्यधाराओं की प्रवृत्तियों तथा स्वातंत्र्योत्तर काव्यधाराओं की पृष्ठभूमि से परिचित करवाना है।

अपेक्षित अधिगम परिणाम

1. आधुनिक काल के अंतर्गत आधुनिक और आधुनिकता के अर्थ को समझ पायेंगे
2. हिन्दी की विभिन्न गद्य विधाओं से परिचित होंगे
3. हिन्दी की अन्य गद्येतर विधाओं को भी जान पायेंगे

ईकाई	पाठ्यसामग्री	व्याख्यान
I	आधुनिक कालः आधुनिक और आधुनिकता का तात्पर्य, नवजागरण का स्वरूप, सन् 1857 का विद्रोह, राष्ट्रीय व सांस्कृतिक चेतना	10
II	आधुनिक काव्यधारा-I : भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद (राष्ट्रीय व सांस्कृतिक काव्यधारा)	20

III	आधुनिककालीन काव्यधारा-II : प्रगतिवादी कविता, प्रयोगवादी कविता, नई कविता, साठोत्तरी कविता, नवगीत, गज़ल	15
IV	हिन्दी गद्य विधाएं- उद्भव और विकास (नाटक, कहानी, उपन्यास, निबंध)	10
V	नयी गद्य विधाएं- सामान्य परिचय (एकांकी, रेखाचित्र/संस्मरण, यात्रा वृतान्त)	10
VI	हिन्दी गद्येत्तर विधाएं- सामान्य परिचय (रिपोर्ताज, डायरी, आत्मकथा, जीवनी, इंटरव्यू)	10

अध्ययन सामग्री

रामचंद्र शुक्ल, *हिंदी साहित्य का इतिहास*, दिल्ली, प्रकाशन संस्थान

हजारी प्रसाद द्विवेदी, *हिंदी साहित्य की भूमिका*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

हजारी प्रसाद द्विवेदी, *हिंदी साहित्यः उद्भव और विकास*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

हजारी प्रसाद द्विवेदी, *हिंदी साहित्य का आदिकाल*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, *हिंदी साहित्य का अतीत*, दिल्ली, वाणी प्रकाशन

नगेन्द्र (संपा.), *हिंदी साहित्य का इतिहास*, दिल्ली, मयूर पेपरबैक्स

राजबली पांडेय (व अन्य), *हिंदी साहित्य का बृहत इतिहास* (17 खण्ड), वाराणसी, नागरी प्रचारिणी सभा

Paper Code: **HIN203GE**

Paper Title: **प्रयोजनमूलक हिन्दी (Credit: 5+1+0=6)**

यह प्रश्नपत्र छात्रों को भाषिक क्षमता के विकास के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए निर्मित किया गया है। कार्यालयों में इस्तेमाल होने वाली भाषा के विभिन्न रूपों के सैद्धांतिक और व्यवहारिक रूपों का अध्ययन इस प्रश्नपत्र का उद्देश्य है। इसके साथ संवैधानिक रूप से हिन्दी भाषा की स्थिति तथा केंद्रीय कार्यालयों में राजभाषा के प्रयोग की अनिवार्यता के विषय में भी छात्रों प्रशिक्षित करना इस प्रश्नपत्र का उद्देश्य है।

1. छात्र कार्यालय में भाषा प्रयोग के स्वरूप को समझ पाएंगे।
2. हिन्दी में कार्यालयी पत्र को लिखने में सक्षम हो पाएंगे।
3. राजभाषा के रूप में हिन्दी की संवैधानिक स्थिति से परिचित हो पाएंगे।
4. कार्यालयी पत्रों के अनुवाद के सैद्धांतिक व व्यवहारिक स्वरूप से परिचित हो पाएंगे।

ईकाई	पाठ्यसामग्री	व्याख्यान
I	प्रयोजनमूलक हिन्दी- अर्थ, परिभाषा, स्वरूप व तत्व (पारिभाषिक शब्दावली)	15

II	कामकाजी हिन्दी (सर्जनात्मक भाषा, संपर्क भाषा व राजभाषा)	15
III	कार्यालयी हिन्दी का व्यवहारिक स्वरूप (आलेखन, टिप्पणी, पत्र-लेखन)	10
IV	जनमाध्यमों में लेखन (जनसंचार का अर्थ व परिभाषा, विज्ञापन, विज्ञापन लेखन, समाचार व उद्घोषणा लेखन)	10
V	प्रयोजनमूलक हिन्दी और अनुवाद (अनुवाद, अनुवाद के प्रकार, कार्यालयी अनुवाद की समस्याएँ)	10
VI	कंप्यूटर और हिन्दी का प्रयोग	15

अध्ययन सामग्री

रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, *प्रयोजनमूलक हिन्दी*, दिल्ली, वाणी प्रकाशन

राजेन्द्र मिश्र, *प्रयोजनमूलक हिन्दी के विविध रूप*, दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन

कृष्णकुमार गोस्वामी, *भाषा के विविध रूप और अनुवाद*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

रमेश तरूण, *प्रयोजनमूलक हिन्दी*, दिल्ली, अशोक प्रकाशन

अमूल्यचंद्र वर्मन, *व्यवहारिक हिन्दी*, गुवाहाटी, असम हिन्दी प्रकाशन

दंगल झाल्टे, *प्रयोजनमूलक हिन्दी- सिद्धांत व प्रयोग*, दिल्ली, वाणी प्रकाशन

भोलानाथ तिवारी, *राजभाषा हिन्दी*, दिल्ली, वाणी प्रकाशन

अर्चना श्रीवास्तव, *प्रयोजनमूलक हिन्दी के विविध आयाम*, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन

Paper Code: **HIN204A**

Paper Title: **आधुनिक हिन्दी कथा -साहित्य (Credit: 2+0+0=2)**

इस पाठ्यक्रम में छात्रों को कथा-साहित्य का विश्लेषणात्मक ज्ञान देना। कहानी के स्वरूप और विकास यात्रा को जान सकेगा। विभिन्न लेखको और उनकी रचनओं का विशिष्ट ज्ञान मिलेगा।

अपेक्षित अधिगम परिणाम

1. हिंदी साहित्य के कथा साहित्य का विशिष्ट ज्ञान
2. प्रमुख लेखकों और उनकी रचनाओं का विशिष्ट ज्ञान

ईकाई	पाठ्यसामग्री	व्याख्यान

I	कहानी – अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, विस्तार, कहानी भेद, विविध तत्व	15
II	कफन (प्रेमचंद), आकाशदीप (जयशंकर प्रसाद), गुलकी बन्नो (धर्मवीर भारती) यही सच हैं (मन्नू भंडारी), चीफ की दावत (भीष्म साहनी), जिंदगी और जोंक (अमरकांत)	15

अध्ययन सामग्री

गोपालराय, *हिन्दी कहानी का इतिहास*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

रामदरश मिश्र, *हिन्दी कहानी – अंतरंग पहचान*, दिल्ली, नेशनल पब्लिकेशन हाउस

नामवर सिंह, *कहानी नई-कहानी*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

राजेंद्र यादव (संपा.), *एक दुनिया समानांतर,* दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन

विजयपाल सिंह (संपा.), *कथा-एकादशी*, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन

Semester III

Paper Code: **HIN301C**

Paper Title: **भारतीय काव्यशास्त्र (Credit: 5+1+0=6)**

भारतीय काव्यशास्त्र में साहित्य के मूल्यांकन के विभिन्न आधारों को प्रस्तावित करता है। भारत में साहित्य चिंतन परंपरा बहुत प्राचीन है। भरत मुनि से लेकर आधुनिक समय तक इसका विस्तार है। इस पाठ्यक्रम में साहित्य (काव्य) के विभिन्न रूपों और अंगों का अध्ययन प्रस्तावित है।

अपेक्षित अधिगम परिणाम

1. इस पाठ्यक्रम को पढ़ने के पश्चात विद्यार्थीकाव्यचिंतन के विभिन्न संप्रदायों के विषय में ज्ञान अर्जन कर पाएंगे।
2. इसके अलावा काव्य-सौंदर्य के विभिन्न पक्षों से भी परिचित हो सकेगी।
3. विद्यार्थी साहित्य सृजन के मूलाधार सृजन की केन्द्रीय चेतना और उसके विभिन्न प्रयोजनोंको समझ सकेंगे।
4. उनमें साहित्य सृजन की अभिरुचि पैदा हो सकेगी।
5. विद्यार्थी कविता के मानकों को समझकर कविता का सही ढंग से विश्लेषण कर सकेंगे।

ईकाई	पाठ्यसामग्री	व्याख्यान
I	भारतीय साहित्य चिन्तन की परम्परा एवं विभिन्न संप्रदाय,काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन	15

II	काव्य लक्षण, काव्य भेद, शब्द शक्ति	15
III	रस अर्थ, परिभाषा, रस संप्रदाय, रस निष्पति, साधारणीकरण, रस के अंग	10
IV	अलंकार- अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, अलंकार संप्रदाय, अलंकार भेद	10
V	ध्वनि- अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, ध्वनि संप्रदाय	10
VI	वक्रोक्ति- अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, वक्रोक्ति संप्रदाय, भेद, महत्व	15

अध्ययन सामग्री

गुलाब राय, *काव्य के तत्व*, दिल्ली, आत्माराम एंड संस

रामबहोरी शुक्ल, *काव्य प्रदीप*, इलाहाबाद, हिन्दी भवन

बच्चन सिंह, *भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्रः तुलनात्मक अध्ययन*, पंचकूला, साहित्य अकादमी

गणेश त्रयंबक देशपांडे, *भारतीय साहित्य शास्त्र*, बंबई, पापुलर बुक डिपो

बलदेव उपाध्याय, *भारतीय साहित्यशास्त्र*, वाराणसी

भगीरथ मिश्र, *काव्यशास्त्र*, दिल्ली

राधाबल्लभ त्रिपाठी, *भारतीय काव्यशास्त्र की आचार्य परम्परा*, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन

उदयभानु सिंह (संपा.), *भारतीय काव्यशास्त्र*, नई दिल्ली, राजेश प्रकाशन

सत्यदेव चौधरी, *भारतीय काव्यशास्त्र*, दिल्ली, अलंकार प्रकाशन

राममूर्ति त्रिपाठी, *भारतीय काव्यविमर्श*, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन

Paper Code: **HIN302C**

Paper Title: **आधुनिक हिन्दी कविता (नवजागरणकाल से छायावाद तक) (Credit: 5+1+0=6)**

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को आधुनिकयुगीन हिन्दी काव्यधाराओं के अंतर्गत भारतेन्दुयुग से छायावादयुग के काव्यों से अवगत करवाना है। आधुनिक काल में काव्यगत नई प्रवृत्तियाँ उभरी थी, इन प्रवृत्तियों के अंतर्गत छात्रों को छायावादयुगीन विशेष प्रवृत्ति हालावाद एवं सांस्कृतिक व राष्ट्रीय चेतना सम्पन्न काव्य से परिचित करवाना है।

अपेक्षित अधिगम परिणाम

1. हिन्दी साहित्य में नवजागरण के अग्रदूत भारतेन्दु के कृतित्व से परिचित होंगे।
2. द्विवेदी युगीन कवि मैथिलिशरण गुप्त की काव्यगत विशेषताओं को जान पायेंगे।
3. छायावाद के प्रमुख स्तंभ प्रसाद, निराला और महादेवी वर्मा से परिचित होंगे।

ईकाई	पाठ्यसामग्री	व्याख्यान
I	भारतेन्दु हरिश्चंद्र (निज भाषा उन्नति, प्रेम प्रसंग)	16
II	मैथिलीशरण गुप्त (भारत भारती-वर्तमान युग)	16
III	जयशंकर प्रसाद (भारत महिमा, बीती विभावरी जाग री!, श्रद्धा सर्ग- कामायनी)	16
IV	सूर्यकांत त्रिपाठी निराला (जूही की कली- परिमल, तोड़ती पत्थर-अपरा, बादल राग (दो भाग)- अपरा)	16
V	हरिवंशराय बच्चन (मधुशाला- प्रथम पाँच कविताएँ)	16
VI	सुभद्रा कुमारी चौहान (झांसी की रानी, जीवन फूल), माखनलाल चतुर्वेदी (पुष्प की अभिलाषा, युग-पुरूष	16

अध्ययन सामग्री

गंगाप्रसाद पाण्डेय, *छायावाद के आधार स्तंभ*

नामवर सिंह, *छायावाद*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

नंददुलारे वाजपेयी, *कवि निराला*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

नंददुलारे वाजपेयी, *जयशंकर प्रसाद*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

नगेन्द्र, *मैथिलीशरण गुप्तः पुनर्मूल्यांकन*, दिल्ली

उमाकांत गोयल, *मैथिलीशरण गुप्तः कवि और भारतीय संस्कृति के आख्यता*

सुधा चौहान, *सुभद्रा कुमारी चौहान*, दिल्ली, साहित्य अकादमी

हरिवंशराय बच्चन, *बच्चन रचनावली*, दिल्ली

भूपेंद्र रायचौधरी (संपा.), *हिंदी काव्य सुधा*, गुवाहाटी, गौहाटी विश्वविद्यालय

Paper Code: **HIN303C**

Paper Title: **हिन्दी कहानी: उद्भव और विकास (Credit: 5+1+0=6)**

इस पाठ्यक्रम में छात्रों को हिन्दी कहानी की आरम्भिक स्वरूप और परम्परा के बारे में अध्यायन कराया जाएगा। हिन्दी कहानी के उद्भव और विकास की जानकारी दिया जाएगा । कहानी विश्लेषण को समझ सकते हैं। कथा साहित्य में कहानी की स्थिति का विश्लेषण इस पाठ्यचर्चा का अंग है। हिन्दी की प्रमुख कहानियाँ और कहानीकार के बारे में ज्ञान प्राप्त होगा।

अपेक्षित अधिगम परिणाम

1. हिन्दी कथा साहित्य का परिचय
2. कहानी लेखन और प्रभाव का विश्लेषण
3. प्रमुख कहानीकार और उनकी कहानी के माध्यम से कहानी की उपयोगिता और विश्लेषण की समझ

ईकाई	पाठ्यसामग्री	व्याख्यान
I	कहानी: अर्थ, परिभाषा, स्वरूप एवं विस्तार	10
II	कहानी के भेद और विविध तत्व	5
III	कफन (प्रेमचंद), पुरस्कार (जयशंकर प्रसाद), राही (सुभद्राकुमारी चौहान)	15
IV	रोज (अज्ञेय), गुलकी बन्नो (धर्मवीर भारती), भोलाराम का जीव (हरिशंकर परसाई)	15
V	जिंदगी और जोंक (अमरकांत), मछलियाँ (उषा प्रियंवदा), तीसरी कसम (फणीश्वरनाथ रेणु)	15
VI	खोई हुई दिशाएँ (कमलेश्वर), यही सच हैं (मन्नू भंडारी)	15

अध्ययन सामग्री

गोपाल राय, *हिन्दी कहानी का इतिहास,* दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

रामदरश मिश्र, *हिन्दी कहानी अंतरंग पहचान*, दिल्ली, नेशनल पब्लिकेशन

राजेंद्र यादव (संपा), *एक दुनिया समानांतर*, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

परमानंद श्रीवास्तव, *हिन्दी कहानी की रचना- प्रक्रिया*, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन

कमलेश्वर, *नई कहानी की भूमिका*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

नरेंद्र मोहन, *हिन्दी कहानी- बीसवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध*, दिल्ली, सामयिक प्रकाशन

Paper Code: HIN 304GE

Paper Title: आधुनिक हिन्दी कविता और कहानी (Credit: 5+1+0=6)

इस प्रश्नपत्र का केंद्रीय उद्देश्य हिन्दी भाषा और साहित्य विविधता से छात्रों को परिचित कराना है। आधुनिक हिन्दी साहित्य किस प्रकार आधुनिक संवेदना का पर्याय रहा, इसे इस प्रश्नपत्र के जरिए छात्र आसानी से समझ सकेंगे। साहित्य की प्रमुख

विधाओं- कविता, कहानी, नाटक और निबंध विधा की कुछ प्रतिनिधिक रचनाओं का अध्ययन छात्रों के संवेदनात्मक विकास में मददगार होगा।

अपेक्षित अधिगम परिणाम

1. छात्र कविता, कहानी, नाटक और निबंध विधाओं में व्यवहारिक अंतर को समझ पाएंगे।
2. आधुनिक हिन्दी की काव्य-संवेदना से परिचित हो पाएंगे।
3. कहानी और नाटक के जरिए रचनात्मक अभिव्यक्तियों की विविधता और उसके प्रभाव को समझ पाएंगे।
4. निबंध विधा की प्रतिनिधिक रचनाएं छात्रों को वैचारिक स्तर पर प्रेरित करेंगी।

ईकाई	पाठ्यसामग्री	व्याख्यान
I	साहित्य व कला- संक्षिप्त परिचय	10
II	हिन्दी साहित्य (आधुनिक काल, आधुनिक साहित्यिक भाषा और साहित्यिक संवेदना)	5
III	आधुनिक हिन्दी काव्य (मैथिलीशरण गुप्त- यशोधरा, माखनलाल चतुर्वेदी- पुष्प की अभिलाषा, जयशंकर प्रसाद- मेरे नाविक, सूर्यकांत त्रिपाठी- जागो फिर एक बार, सुमित्रानंदन पंत- परिवर्तन, रामधारी सिंह- हिमालय)	15
IV	हिन्दी कहानी (उसने कहा था- चंद्रधर शर्मा गुलेरी, पूस की रात- प्रेमचंद, परदा- यशपाल)	15
V	हिन्दी एकांकी (जगदीशचंद्र माथुर- भोर का तारा, लक्ष्मीनारायण लाल- मम्मी ठकुराइन)	15
VI	हिन्दी निबंध (हजारीप्रसाद द्विवेदी- नाखून क्यों बढ़ते हैं, रामधारी सिंह दिनकर- भारत की सांस्कृतिक एकता)	15

अध्ययन सामग्री

रामचंद्र शुक्ल, *हिन्दी साहित्य का इतिहास*, दिल्ली, प्रकाशन संस्थान

नगेंद्र (सं.), *हिन्दी साहित्य का इतिहास*, दिल्ली, मयूर प्रकाशन

सुरेंद्र प्रताप, *आधुनिक कहानियाँ*, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन

विजयपाल सिंह, *आधुनिक काव्यधारा*, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन

विजयपाल सिंह, *श्रेष्ठ हिन्दी एकांकी*, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन

रामचंद्र तिवारी (सं.), *निबंध निकष*, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन

चितरंजन मिश्र (संपा.), *कथाभूमि*, दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन

Paper Code: HIN 001SEC

Paper Title: अनुवाद : सिद्धांत और प्रयोग (Credit: 2+0+0=2)

इस पाठ्यक्रम के जरिए पाठकों में अनुवाद की समझ एवं उसकी महत्ता व प्रासंगिकता की समझ को विकसित किया जा सकेगा। अनुवाद के व्यवहारिक स्वरूप की जानकारी देना भी इस पाठ्यचर्या का एक अन्य उद्देश्य है।

अपेक्षित अधिगम परिणाम

1. विद्यार्थियों में अनुवाद के विविध पक्षों की समझ विकसित होगी
2. अनुवाद के विभिन्न प्रकारों की सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक प्रक्रिया से अवगत हो पाएंगे।
3. विषय के प्रति जागरूकता एवं विषय के विभिन्न पक्षों का प्रयोगात्मक समझ विकसित हो पाएंगी।
4. संप्रेषण कौशल में दक्षता विकसित होगी।
5. अनुवाद की प्रक्रिया के दौरान अन्य भाषाओं के विविध क्षेत्रों के अंतर संबंधों का बोध कराया जाएगा।

ईकाई	पाठ्यसामग्री	व्याख्यान
I	अनुवाद : अर्थ, परिभाषा, स्वरूप	5
II	अनुवाद के क्षेत्र एवं प्रकार	10
III	सफल अनुवादक के गुण, विशेषताएँ, आवश्यकताएँ	5
IV	व्यावहारिक अनुवाद: अँग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद / हिन्दी से अँग्रेजी में अनुवाद	10

अध्ययन सामग्री

भोलानाथ तिवारी, *अनुवाद विज्ञान*, दिल्ली, शब्दकार प्रकाशन

जी. गोपीनाथन, *अनुवादः सिद्धान्त और प्रयोग*, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन

रामगोपाल सिंह, *अनुवाद विज्ञानः स्वरूप और समस्याएं*, अहमदाबाद, पार्शब प्रकाशन ।

SEMESTER IV

Paper Code: HIN 401C

Paper Title: हिन्दी आलोचना (Credit: 5+1+0=6)

इस पाठ्यचर्या का उद्देश्य छात्रों को आलोचना विधा के स्वरूप से परिचित कराने के साथ आलोचना विधा के साहित्यिक और सामाजिक औचित्य से परिचित कराना है। आलोचना साहित्य-मूल्यांकन की विधा है, लेकिन इसके साथ इस विधा का सामाजिक महत्व भी है। विभिन्न विचारों का प्रभाव भी इस विधा पर सबसे ज्यादा दिखाई देता है। इस रूप में आलोचना और विचारधारा के संबंध से भी छात्रों को परिचित कराना इस पाठ्यचर्या का एक अन्य उद्देश्य है।

अपेक्षित अधिगम परिणाम

1. छात्र हिन्दी के प्रमुख आलोचकों की रचनाओं से परिचित हो पाएंगे।
2. इसके साथ में हिन्दी के प्रमुख आलोचकों की प्रतिनिधि रचनाओं के माध्यम से साहित्य और इतिहास मूल्यांकन के विविध आयामों से भी छात्र परिचित हो पाएंगे।

ईकाई	पाठ्यसामग्री	व्याख्यान
I	हिन्दी आलोचना: उद्भव, विकास, विस्तार व पारिभाषिक शब्दावली	5
II	हिन्दी आलोचना का उदय आरंभिक आलोचक: शिवसिंह सेंगर, गार्सा द तासी व मिश्रबंधु, महावीरप्रसाद द्विवेदी, द्विवेदी युग के आलोचक, श्यामसुंदर दास	10
III	आलोचक (सामान्य परिचय)-आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नंददुलारे बाजपेई, रामविलास शर्मा, डॉ. नगेन्द्र	15
IV	प्रेमचंद - साहित्य का उद्देश्य आचार्य रामचंद्र शुक्ल - काव्य में लोकमंगल	15
V	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी - आधुनिक साहित्य: नई मान्यताएँ	15
VI	रामविलास शर्मा – तुलसी साहित्य के सामंतविरोधी मूल्य डॉ. नगेंद्र- आधुनिकता का प्रश्न: साहित्य के संदर्भ में	15

अध्ययन सामग्री

धीरेन्द्र वर्मा (सं.), *साहित्य कोश*, वाराणसी, ज्ञानमण्डल लिमिटेड

आचार्य रामचंद्र शुक्ल, *चिन्तामणि*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

रामअवध द्विवेदी, *साहित्य सिद्धांत*, पटना, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद

रेनेवेलक (अनु. ऑस्टिन वारेन), *साहित्य सिद्धांत*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

नामवर सिंह, *कविता के नये प्रतिमान*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

बच्चन सिंह, *हिंदी आलोचना के बीजशब्द*, दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन

रमेश गौतम, *मिथकीय अवधारणा और यथार्थ*, दिल्ली,

रामस्वरूप चतुर्वेदी, *हिंदी गद्य, विन्यास और यथार्थ*, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन

विश्वनाथ त्रिपाठी, *हिंदी आलोचना*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

Paper Code: HIN 402C

Paper Title: आधुनिक हिन्दी कविता (प्रगतिवाद से समकालीन कविता) (Credit: 5+1+0=6)

इस पत्र का उद्देश्य हिन्दी साहित्य के इतिहास के छायावादी के बाद के प्रगतिवाद से समकालीन कविता तक के समय को सशक्त ढंग से प्रस्तुत करना रहा हैं। पाठ्यक्रम का यह पक्ष आधुनिक हिन्दी कविता के स्वर्णयुग मानने वाले छायावाद की बाद की कविता के पक्ष को उजागर करता हैं। कविता के मूल भावपक्ष को हृदयगमं करने में सक्षम बनाना। कवि की अनुभूतियों तथा कल्पना को समझने योग्य बनाना। कविता के माध्यम से युग बोध पर विचार करना।

अपेक्षित अधिगम परिणाम

1. हिन्दी कविता को काल विशेष के संदर्भ में गह्न रूप से जानकारी पा सकेंगे।
2. कविता के भाव और कला दोनों पक्षों के सौंदर्य को सीखेगा।
3. कविता सीखने के साथ ही साथ वैचारिक मूल्यों को जानेगा।
4. कविता में निहीत जीवन मूल्य के परिचय मिल पायेगा।

ईकाई	पाठ्यसामग्री	व्याख्यान
I	केदारनाथ अग्रवाल (माँझी न बजाओं बंशी), अज्ञेय (कलगी बाजरे की, यह दीप अकेला)	15
II	शमशेर बहादुर सिंह (बात बोलेगी, एक पीली शाम), नागार्जुन (बादलों को घिरते देखा, अकाल और उसके बाद)	15
III	रघुवीर सहाय (हँसों हँसों जल्दी हँसों, दो अर्थ का भय), मुक्तिबोध (ब्रह्मराक्षस)	15
IV	भवानीप्रसाद मिश्र (गीत फरोश, सतपुड़ा के घने जंगल), धूमिल (मोचीराम, नक्सलबाड़ी)	15
V	केदारनाथ सिंह (रोटी, दुपहरिया), लीलाधर जगूड़ी (ईश्वर और आदमी, वृक्ष हत्या)	8
VI	अरूण कमल (लोककथा, नए इलाके में)	7

अध्ययन सामग्री

नामवर सिंह, *कविता के नए प्रतिमान*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

सत्यकाम विद्यालंकार, *काव्य सुषमा*, दिल्ली, नया साहित्य

विश्वनाथप्रसाद तिवारी, *समकालीन हिन्दी कविता*, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन

रामस्वरूप चतुर्वेदी, *आधुनिक कविता यात्रा*, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन

रामनारायण शुक्ल (व अन्य) (संपा.), *छायावादोत्तर काव्य संग्रह*, वाराणसी, संजय बुक सेंटर

Paper Code: HIN 403C

Paper Title: पाश्चात्य काव्यशास्त्र (Credit: 5+1+0=6)

इस पाठ्यक्रम में प्राश्चात्य काव्यशास्त्र के विभिन्न सिद्धांतों का अध्ययन प्रस्तावित है। प्रथम प्राश्चात्य काव्यशास्त्री के रूप में प्लेटो से इस अध्ययन का आरंभ है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में प्लेटो से लेकर रिचर्ड्स तक के काव्य चिन्तन को समेटा गया है। इस पाठ्यक्रम में साहित्य के विभिन्न वादों जैसे- स्वच्छदतावाद, आदर्शवाद, यथार्थवाद, मार्क्सवाद, अस्तित्ववाद, नई समीक्षा, आधुनिकता, उत्तर आधुनिकतावाद का अध्ययन भी प्रस्तावित है।

अपेक्षित अधिगम परिणाम

1. विद्यार्थी पश्चिमी साहित्य चिंतन की परम्परा से परिचित हो सकेंगे।
2. विद्यार्थियों में आलोचना दृष्टि विकसित होगी।
3. वे भारतीय और पाश्चात्य आलोचना दृष्टियों का तुलनात्मक विवेचन कर सकेंगे।
4. उन्हें आलोचना की नयी प्रणालियों का ज्ञान प्राप्त होगा। उनमें साहित्य को समझने की दृष्टि विकसित हो सकेगी।

ईकाई	पाठ्यसामग्री	व्याख्यान
I	पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परम्परा	10
II	प्लेटो का काव्य सिद्धान्त, अरस्तु (अनुकरण, विरेचन, त्रासदी)	15
III	लौंगिनुस (उद्दात तत्व), कॉलरिज	15
IV	इलियट (निर्वैयक्तिकता), क्रोचे (अभिव्यंजनावाद), रिचर्ड्स (मूल्यसिद्धांत)	10
V	साहित्यिक आंदोलन- कला कला के लिए, स्वच्छदतावाद, आदर्शवाद, यथार्थवाद	10
VI	मार्क्सवाद, अस्तित्ववाद, नई समीक्षा, आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता	15

अध्ययन सामग्री

निर्मला जैन, *उद्दात के विषय में*, दिल्ली, वाणी प्रकाशन

नगेन्द्र, *अरस्तु का काव्यशास्त्र*, दिल्ली, नेशनल पब्लिकेशन हाउस

बच्चन सिंह, *भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्रः तुलनात्मक अध्ययन*, पंचकूला, हरियाणा ग्रंथ अकादमी

नामवर सिंह (संपा.), *कार्ल मार्क्स कला एवं साहित्य चिंतन*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

भागीरथ मिश्र, *पाश्चात्य काव्यशास्त्र: इतिहास*, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन

देवेन्द्रनाथ शर्मा, *पाश्चात्य काव्यशास्त्र*, दिल्ली, नेशनल पाब्लिशिंग हाउस

Paper Code: HIN 404E

Paper Title: हिन्दी साहित्य और सिनेमा (Credit: 5+1+0=6)

इस पाठ्यक्रम के जरिए पाठकों को साहित्य और सिनेमा की अंतर्संबंध से परिचित कराया जाएगा। साथ ही साहित्य और सिनेमा की मूलभूत विशेषताओं से अवगत कराते हुए इनकी महत्ता को समझाया जा सकेगा।

अपेक्षित अधिगम परिणाम

1. हिंदी साहित्य और सिनेमा की मूलभूत विशेषताओं से परिचित हो सकेंगी।
2. सिनेमा और साहित्य के अंतर्संबंध को समझ सकेंगे।
3. एक साहित्य व फिल्म निर्माण के संबंध में मूलभूत ज्ञान से परिचित हो सकेंगे।
4. साहित्य और सिनेमा की महत्ता व प्रासंगिकता को समझ सकेंगे।

ईकाई	पाठ्यसामग्री	व्याख्यान
I	हिन्दी साहित्य: स्वरूप विवेचन, साहित्य की परिभाषा, तत्व, भेद	10
II	हिन्दी सिनेमा: स्वरूप विवेचन, सिनेमा की परिभाषा, प्रकार	15
III	सिनेमा का कला पक्ष- कथा-पटकथा, संवाद, स्क्रीनप्ले, गीत-संगीत, अभिनय, नृत्य	15
IV	सिनेमा का तकनीकी पक्ष: फिल्म निर्माता, निर्देशक, कला निर्देशक, संगीत निर्देशक, नृत्य निर्देशक, एक्शन डायरेक्टर, शूटिंग, लाइटिंग ,सेट डिजाइनिंग, मेकअप मैन, वेशभूषा (कास्टूम डिजाइनिंग), केश विन्यास, स्टिल फोटोग्राफी, ध्वनि मुद्रण, साउंड रिकॉर्डिंग, डबिंग, फिल्म एडिटिंग, फिल्म डिस्ट्रीब्यूशन	25
V	साहित्य और सिनेमा का समाज में महत्व	10
VI	हिन्दी साहित्य पर आधारित किसी एक हिन्दी सिनेमा पर रिपोर्ट का प्रस्तुतिकरण	

अध्ययन सामग्री

मनमोहन चढ्ढा, *हिन्दी सिनेमा का इतिहास*

अनुपम ओझा, *भारतीय सिने सिद्धांत*

विनोद भारद्वाज, *सिनेमा: कल, आज, कल*

Paper Code: HIN 002SEC

Paper Title: कार्यालयी हिन्दी (Credit: 2+0+0=2)

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को हिन्दी भाषा के व्यवहारिक प्रयोग से परिचित करवाना हैं। इससे छात्र कार्यालयों में हिंदी के व्यावहारिक रूप एवं प्रयोग को समझ पायेंगे साथ ही भविष्य में रोजगार की दृष्टि से उनको नये आयामों से परिचित करवाना हैं।

अपेक्षित अधिगम परिणाम

1. सामान्य हिंदी तथा कार्यालयी हिंदी के अंतर्संबंध को समझ पायेंगे
2. कार्यालयी आवश्यकताओं के अनुरूप उसकी भाषा एवं चिन्हों से परिचित होंगे
3. कार्यालयों में प्रयुक्त पत्राचारों के विविध रूप से अवगत होंगे।

ईकाई	पाठ्यसामग्री	व्याख्यान
I	कार्यालयी हिन्दी (अर्थ व स्वरूप), कार्यालयी हिन्दी (अभिप्राय तथा उद्देश्य), सामान्य हिन्दी और कार्यालयी हिन्दी का अंतर्संबंध, कार्यालयी हिन्दी का क्षेत्र, कार्यालयी हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली	15
II	कार्यालयी पत्राचार (अर्थ व स्वरूप), कार्यालयी पत्राचार के विविध प्रकार (सामान्य परिचय), ज्ञापन, परिपत्र, अनुस्मारक, आदेश, सूचनाएँ, निविदा, टिप्पण, प्रारूपण और संक्षेपण, आवेदन लेखन	15

अध्ययन सामग्री

कैलाशनाथ पाण्डेय, *प्रयोजनमूलक हिन्दी की नई भूमिका*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

दंगट झाल्टे, *प्रयोजनमूलक हिन्दीः सिद्धांत और प्रयोग*, दिल्ली, वाणी प्रकाशन

कृष्ण कुमार गोस्वामी, *प्रयोजनमूलक भाषा और कार्यालयी हिन्दी,* दिल्ली, कलिंगा पब्लिकेशन

राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव, *प्रारूप शासकीय पत्राचार और टिप्पण लेखन विधि*,

SEMESTER –V

Paper Code: HIN 501C

Paper Title: हिन्दी उपन्यास: उद्भव, विकास व विस्तार (Credit: 5+1+0=6)

इस पाठ्यक्रम में छात्रों को उपन्यास साहित्य की आरम्भिक स्वरूप और परम्परा के बारे में अध्ययन कराया जाएगा। प्रमुख साहित्यकार और उनके उपन्यासों की चर्चा कथा साहित्य विश्लेषण पद्धति को शिक्षेंगें। हिन्दी उपन्यास की विकास –यात्रा और रचना प्रक्रिया से पहचान होगा। अनुकरणिक उपन्यास और मौलिक उपन्यास का अन्तर को समझ सकेगा। उपन्यास की कथ्य शिल्प और उपन्यासों के तत्व का विस्तृत अध्ययन पाठ्यचर्चा किया जाएगा ।उपन्यासों के माध्यम से तत्कालीन समाज व्यवस्था का ज्ञान होगा ।

अपेक्षित अधिगम परिणाम

1. उपन्यास के विश्लेषण की पद्धति
2. हिन्दी उपन्यास के उदभव और विकास का ज्ञान
3. प्रमुख लेखकों के उपन्यास का परिचय
4. तत्कालीन समाज व्यवस्था का ज्ञान

ईकाई	पाठ्यसामग्री	व्याख्यान

I	उपन्यास (अर्थ व परिभाषा), उपन्यास के उदय के कारण, उपन्यास के प्रकार और तत्व	15
II	प्रमुख उपन्यासकारों का योगदान	10
III	प्रेमचन्द– गबन	15
IV	जैनेन्द्र कुमार– त्यागपत्र	15
V	मन्नू भण्डारी– आपका बंटी	10
VI	भगवतीचरण वर्मा– चित्रलेखा	10

अध्ययन सामग्री

रामविलास शर्मा, *प्रेमचंद और उनका युग*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

भीष्म साहनी व भगवती प्रसाद निदारिया (संपा.), *आधुनिक हिन्दी उपन्यास*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

रामदरश मिश्र, *हिन्दी उपन्यास एक अंतर्यात्रा*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

इंद्रनाथ मदान, *हिन्दी उपन्यास की पहचान और परख*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

गोपाल राय, *हिन्दी उपन्यास का इतिहास*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

मधुरेश, *हिन्दी उपन्यास का विकास*, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन

Paper Code: HIN 501C

Paper Title: हिन्दी नाटक व एकांकी (Credit: 5+1+0=6)

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को हिन्दी नाट्य परंपरा से परिचित करवाना है। नाट्य विधा की शुरूवात संस्कृत नाटकों से मानी जाती है, अतः छात्रों को संस्कृत नाटक का संक्षिप्त परिचय प्रदान करते हुए हिन्दी नाटकों के उद्भव एवं विकास के साथ इसके स्वरूप से परिचय करवाना है।

अपेक्षित अधिगम परिणाम

1. नाटक एवं एकांकी कला के तत्वों को जानेंगे।
2. नाटक व एकांकी के कथ्य, शिल्प और रंगमंच के संबंध से अवगत होंगे।
3. आधुनिक युगीन नाटकों के स्वरूप को पहचान पायेंगे।

ईकाई	पाठ्यसामग्री	व्याख्यान
I	हिन्दी नाटक व एकांकीः स्वरूप एवं तत्व	10

II	अंधेर नगरी (नाटक)	10
III	ध्रुवस्वामिनी (नाटक)	20
IV	आषाढ़ का एक दिन (नाटक)	15
V	एकांकी संग्रह-I: चारूमित्रा (डॉ. रामकुमार वर्मा), रीढ़ की हड्डी (जगदीशचंद्र माथुर), यह स्वतंत्रता का युग	10
VI	एकांकी संग्रह-II: सूखी डाली (उपेन्द्रनाथ अश्क), बकरी (सर्वेश्वरदयाल सक्सेना), आगरा बाजार (हबीब तनवीर)	10

अध्ययन सामग्री

सत्येन्द्र तनेजा, *नाटककार भारतेन्दु की रंग परिकल्पना*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

नेमिचन्द्र जैन (संपा.), *आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच*,

रामचरण महेन्द्र, *एकांकी और एकांकीकार*

विजयपाल सिंह (संपा.), *श्रेष्ठ एकांकी*, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन

भारतेन्दु हरिश्चंद्र, *अंधेर नगरी*, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन

जयशंकर प्रसाद, *ध्रुवस्वामिनी*, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन

मोहन राकेश, *आषाढ़ का एक दिन*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

Paper Code: HIN 503DSE

Paper Title: स्त्री साहित्य (Credit: 5+1+0=6)

इस पाठ्यक्रम में स्त्री विमर्श से जुड़े हुए मुद्दों का अध्ययन प्रस्तावित है। आधुनिक समय में स्त्री-मुक्ति का प्रश्न सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता गया है। स्त्री-शोषण के विभिन्न रूपों का अध्ययन स्त्री-मुक्ति की दिशा में पहला कदम है। इसके साथ हिन्दी और भारतीय भाषाओं (असमिया) में स्त्री लेखिकाओं के वैयक्तिक योगदान और उनके सहित्यिक संघर्ष का अध्ययन भी इस पाठ्यक्रम में शामिल है।

अपेक्षित अधिगम परिणाम

1. इस पाठ्यक्रम को पढ़ने के पश्चात छात्र स्त्री अध्ययन से जुड़े हुए विभिन्न मुद्दों से परिचित हो पाएंगे।
2. मुख्यधारा के साहित्य से स्त्री साहित्य में अंतर को चिंह्नित करने में सक्षम होंगे।
3. स्त्री-साहित्य के मूल्यांकन के आधारों से परिचित हो पाएंगे।

ईकाई	पाठ्यसामग्री	व्याख्यान
I	स्त्री विमर्श: अर्थ, अवधारणा, इतिहास, नारी मुक्ति की दिशाएँ	15
II	भारतीय समाज में नारी की स्थिति, स्त्री स्वाधीनता का प्रचार, स्त्री की अस्मिता और सुरक्षा, भारत में महिला आन्दोलन, महिलाओं के लिए बने कानून	15
III	साहित्य में नारीवाद : हिन्दी साहित्य में नारीवाद, प्रमुख हिन्दी लेखिकाएँ और उनका लेखनः महादेवी वर्मा, कृष्णा सोबती, मन्नु भण्डारी, मृदूला गर्ग, चित्रा मुद्गल	10
IV	भारतीय साहित्य में नारीवाद, प्रमुख असमीया नारीवादी लेखिकाएँ और उनका साहित्य- निरूपमा बरगोहाँई, अरूपा पतंगिया कलिता	10
V	उपन्यास- जिंदगी कोई सौदा नहीं (इन्दिरा गोस्वामी)	10
VI	कहानी- यही सच है (मन्नू भण्डारी), दुनिया का कायदा (मृदुला गर्ग)	15

अध्ययन सामग्री

राजवाला सिंह व मधुवाला सिंह, *भारत में महिलाएँ*, जयपुर, आविष्कार पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स

अरविन्द जैन, *औरत अस्तित्व और अस्मिता*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

ममता जेटली और श्रीप्रकाश शर्मा, *आधी आवादी का संघर्ष*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

राजेन्द्र यादव, *आदमी की निगाह में औरत*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

एम. मालती, *स्त्री विमर्श भारतीय परिप्रेक्ष्य*, दिल्ली, वाणी प्रकाशन

Paper Code: HIN 504DSE

Paper Title: लोक साहित्य (Credit: 5+1+0=6)

इस पाठ्यक्रम के जरिए छात्र लोकसाहित्य के प्रकृत अर्थ, महत्व व अवधाराणा के समझते हुए, इसकी प्रमुख विशेषताएँ एवं प्रासंगिकता से अवगत हो सकेंगे। साथ ही साथ लोक साहित्य किसी भी भाषा, संस्कृति, साहित्य व समाज में अपनी क्या भूमिका रखता उसे भी जान सकेंगे।

अपेक्षित अधिगम परिणाम

1. लोकसाहित्य के उद्भव व विकास के बारे में जान सकेंगे।
2. लोकसाहित्य की प्रकृति, उसकी उचित परिभाषा, महत्व व अवधारणा को समझ सकेंगे।

3. इसके विविध क्षेत्रों से परिचित हो सकेंगे।
4. इसकी प्रमुख विशेषताओं एवं प्रासंगिकता से अवगत हो सकेंगे।
5. भाषा, संस्कृति, साहित्य व समाज में इसकी भूमिका को समझ सकेंगे।

ईकाई	पाठ्यसामग्री	व्याख्यान
I	लोक साहित्य- अर्थ ,परिभाषा, प्रमुख लक्षण तथा विशेषताएँ , महत्व	15
II	लोक साहित्य और शिष्ट साहित्य (संबंध और अंतर)	15
III	लोक साहित्य का वर्गीकरण और लोक साहित्य की विविध विधाएँ	15
IV	लोक साहित्य का संकलन और संग्रह कार्य (लोकभाषा के अध्ययन की आवश्यकता, लोकसाहित्य का संग्रह और संकलन, लोक साहित्य के संग्रह की कठिनाइयाँ, लोक साहित्य संग्रह के लिए उपादान)	15
V	असमीया लोक साहित्य की विविध विधाएँ: लोक गीत, लोक नाट्य, लोक नृत्य, लोक कथा, लोक गाथा, लोकोक्तियाँ, पहेलियाँ)	15
VI	लघु परियोजना-कार्य: लोक-साहित्य अथवा क्षेत्र- अध्ययन (रिपोर्ट–प्रस्तुति)	

अध्ययन सामग्री

सत्यनारायण दूबे शरतेन्दु, *लोक साहित्य की रूपर*

जगदम्बा प्रसाद पाण्डेय एवं श्री राकेश, *लोक साहित्य*,

भूपेन्द्र राय चौधुरी, *असमीया लोक साहित्य की भूमिका*,

नबीन चन्द्र शर्मा, *असमर लोकसाहित्य*, गुवाहाटी, ज्योति प्रकाशन

नबीन चन्द्र शर्मा, *असमर लोकनात्य*, गुवाहाटी, वाणी प्रकाशन

SEMESTER – VI

Paper Code: HIN 601C

Paper Title: आधुनिक गद्य विधाएँ: निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, रिपोर्ताज, डायरी, जीवनी, आत्मकथा, यात्रा साहित्य (Credit: 5+1+0=6)

हिन्दी की गद्यविधाएँ शीर्षक इस प्रश्नपत्र का संयोजन इस रूप में किया गया है कि छात्रों को आधुनिक साहित्य की मुख्य-विधाओं से परे रचनात्मक गद्य के दूसरे रूपों से परिचित कराया जा पाए। गद्य के इन रूपों का विकास आधुनिक युग में हुआ और खासतौर से प्रेस और अखबारों के प्रचलन के साथ। इस तरह से इन गद्य स्वरूपों के अपने वैशिष्ट्य को स्पष्ट करने के साथ इनके सामाजिक प्रयोजन को स्पष्ट करना इस पाठ्यचर्या का उद्देश्य है।

अपेक्षित अधिगम परिणाम

1. छात्र इस पाठ्यचर्या के कई बार बिल्कुल समान दिखती विधाओं के बीच में भी अंतर कर पाने में समर्थ हो पाएंगे।
2. आत्मकथा, जीवनी से लेकर व्यंग्य तक प्रसारित इन गद्य विधाओं की प्रतिनिधिक रचनाओं के माध्यम से छात्र इन गद्य विधाओं के व्यवहारिक स्वरूप को लेकर भी सजग हो पाएंगे।

ईकाई	पाठ्यसामग्री	व्याख्यान
I	निबंध (बालकृष्ण भट्ट- जी, बालमुकुंद गुप्त- शिवशंभु के चिट्ठे बनाम लार्ड कर्जन, रामचंद्र शुक्ल- करूणा, हजारी प्रसाद द्विवेदी – कुटज,सरदार पूर्ण सिंह - मजदूरी और प्रेम	35 Classes
II	संस्मरण-रेखाचित्र (महादेवी वर्मा – भक्तिन)	5 Classes
III	रिर्पोतार्ज (फणीश्वरनाथ रेणु- ऋणजल-धनजल, रांगेय राघव- तूफानों के बीच)	10 Classes
IV	यात्रा साहित्य (स .ही. वा. अज्ञेय- अरे यायावर रहेगा याद (माझुली))	5 Classes
V	जीवनी व आत्मकथा (कमला सांकृत्यायन- महामानव महापंडित- दो अध्याय, मोहनदास गांधी - सत्य ने प्रति मेरे प्रयोग (प्रथम दो अध्याय), हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा (संक्षिप्त) अजित कुमार	15 Classes
VI	व्यंग्य (हरिशंकर परसाई- पगडंडियों का जमाना)	5 Classes

अध्ययन सामग्री

रामस्वरूप चतुर्वेदी, *हिंदी गद्य: विन्यास और विकास*, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन

लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, *हिंदी साहित्य की भूमिका*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

रामविलास शर्मा, *भारतेंदु युग*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

रामचंद्र तिवारी, *छायावादोत्तर हिंदी गद्य साहित्य*, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन

रामचंद्र तिवारी, *हिंदी का गद्य साहित्य*, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन

डॉ. नगेंद्र, *हिंदी वाड्मय: बीसवीं शताब्दी*, दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस

हरदयाल, *आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य*, दिल्ली,

मक्खनलाल शर्मा, *महादेवी का गद्य साहित्य*

रामस्वरूप चतुर्वेदी, *हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास*, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन

विनीता अग्रवाल, *हिंदी आत्मकथा: सिद्धांत और स्वरूप-विश्लेषण*

Paper Code: HIN 602C

Paper Title: तुलनात्मक साहित्य (असमिया साहित्य के विशेष संदर्भ में) (Credit: 5+1+0=6)

तुलनात्मक साहित्य के परिचय, परिभाषा,महत्वों को समझ पायेंगे। आधुनिक असमिया कविता कहानी एवं निबंधों के सामान्य परिचय प्राप्त करेंगे। इसके द्वारा हिन्दी और असमीया साहित्य के विभिन्न साहित्यकारों और उनकी साहित्य का विशिष्ट ज्ञान पाठकों को मिल सकेगा।

अपेक्षित अधिगम परिणाम

1. तुलनात्मक साहित्य के द्वारा हिंदी व असमिया भाषा से भलिभॉति परिचित हो सकेंगे।
2. हिन्दी और असमीया साहित्य के विभिन्न साहित्यकारों और उनकी साहित्य का विशिष्ट ज्ञान पाठकों को मिल सकेगा।
3. तुलनात्मक साहित्य के माध्यम से अनुवाद की विशेषताओं और महत्व को भलिभॉति समझ सकेंगे।

ईकाई	पाठ्यसामग्री	व्याख्यान
I	तुलनात्मक साहित्य : परिभाषा, स्वरूप, तात्पर्य	10
II	तुलनात्मक साहित्य के प्रकार (भारतीय व पाश्चात्य साहित्य के संदर्भ में)	10
III	तुलनात्मक साहित्य में अनुवाद तथा अध्ययन के क्षेत्र व समस्याएँ	10
IV	आधुनिक असमीया कविता: सामान्य परिचय पाठ्य कविताएँ: श्रीमंत शंकरदेव (शिशु लीला), चन्द्रकुमार आगरवाला (मानव वंदना), हिरेन भट्टाचार्य (मोर देश), भूपेन हजारिका (प्रचंद धुमुहाई प्रश्न कोरिले मोक)	15
V	आधुनिक असमीया कहानी: सामान्य परिचय पाठ्य कहानियाँ– लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा (मुक्ति), माहिम बरा (रस), जोगेश दास (गदाधर टी स्टाल), शरत चंद्र गोस्वामी (घुनुचा)	15
VI	आधुनिक असमीया निबंध साहित्य: सामान्य परिचय पाठ्य निबंधें- सत्यनाथ बरा (अन्यर प्रति व्यवहार), वाणिकांत काकति (निशादूत), डिम्बश्वर नेओग (छात्र-जीवन आरु समाज सेवा, नवीन चन्द्र शर्मा (लोकसंस्कृति)	15

अध्ययन सामग्री

बी.एन रायचौधुरी, *असमीया साहित्य निकष*, गुवाहाटी, गौहाती विश्वविद्यालय

चित्र महंत, *असमीया साहित्य का इतिहास*

सत्येन्द्रनाथ शर्मा, *असमीया साहित्यर इतिवृत्त*,

हेमंत कुमार शर्मा, *असमीया साहित्यत दृष्टिपात*,

वाणिकांत काकति, *साहित्य आरू प्रेम*

इंद्रनाथ चौधरी, *तुलनात्मक साहित्य: भारतीय परिप्रेक्ष्य,* दिल्ली, वाणी प्रकाशन

नगेंद्र, *तुलनात्मक साहित्य*, दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस

Paper Code: HIN 603DSE

Paper Title: दलित विमर्श (Credit: 5+1+0=6)

इस पाठ्यक्रम में छात्रों को दलित क्या हैं उसको पहचान पायेंगे। दलितों का सैद्धांतिक और व्यावहारक ज्ञान समझ सकेगा । दलित साहित्य के बारेमें जान सकेगा।दलित अस्मिता का विश्लेषणात्मक ज्ञान प्राप्त होगा। साहित्य और दलित साहित्य के अन्तर को पहचान सकेगा। प्रमुख रचनाओं के अध्ययन के माध्यम से संवेदनात्मक विश्लेषण का ज्ञान ही इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य हैं।

अपेक्षित अधिगम परिणाम

1. दलितविमर्श का ज्ञान
2. दलितों की अस्मिता से संबंधित साहित्य की विश्लेषण क्षमता
3. दलितों की समस्याओं और सके परिवेश को समझना
4. प्रमुख कृतियों का परिचय

ईकाई	पाठ्यसामग्री	व्याख्यान
I	दलित विमर्श: अर्थ, अवधारणा, इतिहास	10
II	दलित आंदोलन: अम्बेडकर और ज्योतिबा फुले और अन्य विचारक	5
III	दलित विमर्श, दलित साहित्य और सामाजिक प्रतिबद्धता	10
IV	कविता- हीरा डोम (अछूत की शिकायत), ओमप्रकाश वाल्मीकी (ठाकुर का कुआँ), मलखान सिंह (सुनो ब्राह्मण)	15
V	आत्मकथा- ओमप्रकाश वाल्मीकी (जूठन- भाग 1)	15

VI	कहानी-I ओमप्रकाश वाल्मीकी (घुसपैठिए), जयप्रकाश कर्दम (तलाश)	20

अध्ययन सामग्री

देवेन्द्र चौबे, *आधुनिक साहित्य में दलित विमर्श*, हैदराबाद, ओरिएंट ब्लैकस्वान

चमन लाल, *दलित साहित्य का मूल्यांकन*, दिल्ली, राजपाल प्रकाशन

शरण कुमार लिंबाले, *दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र*, दिल्ली, वाणी प्रकाशन

एन.सिंह, *दलित साहित्य के प्रतिमान*, दिल्ली, वाणी प्रकाशन

शत्रुघ्न कुमार, *दलित आंदोलन की विविध पक्ष*, गाजियाबाद

एन. सिंह, *दलित साहित्य और युगबोध*, गाजियाबाद, लता साहित्य सदन

ओमप्रकाश वाल्मीकी, *जूठन*, दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन

Paper Code: HIN 604DSE

Paper Title: तुलनात्मक कृष्ण-भक्ति काव्यधारा (Credit: 5+1+0=6)

इस पाठ्यक्रम मे छात्रों को हिन्दी साहित्य के भक्तिकालीन इतिहास का कृष्ण-भक्तिधारा का विश्लेषणात्मक ज्ञान प्राप्त होगा। असमीया साहित्य के कृष्ण-भक्ति कवि और काव्य का परिचय जान पाएगा। तुलनात्मक साहित्य के विषय में ज्ञान मिलेगा। हिन्दी और असमीया साहित्य में कृष्ण भक्ति के स्वरूप को जान सकेगा। हिन्दी और असमीया साहित्य के विभिन्न कवियों और उनकी कविताओं का विशिष्ट ज्ञान मिलेगा।

अपेक्षित अधिगम परिणाम

1. हिन्दी साहित्य के भक्तिकालीन कृष्ण भक्तिधारा का विशिष्ट ज्ञान
2. असमीया साहित्य के कृष्ण-भक्तिधारा का विशिष्ट ज्ञान
3. हिन्दी और असमीया साहित्य के विशिष्ट कवि और उनके कविता की समझ विकसित होगी।
4. तुलनात्मक साहित्य का ज्ञान

ईकाई	पाठ्यसामग्री	व्याख्यान
I	कृष्ण-भक्ति काव्यधारा: उद्भव एवं विकास	14
II	तुलनात्मक साहित्य: अर्थ, परिभाषा, स्वरूप	14
III	असमीया कृष्ण-भक्ति कवि और काव्य का परिचय (?????)	13
IV	शंकरदेव के बरगीत (1, 2, 3, 4, 5), माधव देव के बरगीत (1, 2, 3, 4, 5)	13
V	हिन्दी कृष्ण-भक्ति कवि और काव्य का परिचय	13

VI	सूरदास (गोकुल लीला- सूरसागर), मीराबाई के पद (1, 2, 3, 4, 5), रहीम के पद (1, 2, 3, 4, 5)	13

अध्ययन सामग्री

बी.एन रायचौधुरी, *असमीया साहित्य निकष*, गुवाहाटी, गौहाती विश्वविद्यालय

चित्र महंत, *असमीया साहित्य का इतिहास*

सत्येन्द्रनाथ शर्मा, *असमीया साहित्यर इतिवृत्त*,

हेमंत कुमार शर्मा, *असमीया साहित्यत दृष्टिपात*, गुवाहाटी

वाणिकांत काकति, *साहित्य आरू प्रेम*, गुवाहाटी

इंद्रनाथ चौधरी, *तुलनात्मक साहित्य: भारतीय परिप्रेक्ष्य*, दिल्ली, वाणी प्रकाशन

नगेंद्र, *तुलनात्मक साहित्य*, दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस

धीरेन्द्र वर्मा (संपा.), *सूरसागर*, इलाहाबाद, साहित्य भवन प्राइवेट लि.

विश्वनाथ प्रसाद त्रिपाठी, *मीरा का काव्य*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन